BOOK OF HINDI PSALMODY.

दाऊदमाला।

N. I. T. S.

Price 2 annas.

दाम २ आना।

पितापुत्रपवित्रात्मनेनमः ।

दाऊदमाला ।

ये भजन दाऊद महाराजा की गीत की पुस्तक से नाना वर्ण के रागों में प्रबंध किये गये हैं ॥

दोहा ।

प्रथम रहे जो गड़रिया भेड़ चरावनहार ।
ओई दाउद फिर भये भूपति गुण आगार ॥
सोई दाउद बहुत से गीत बनायो आप ।
तिन को नाना रागमें भजन रचत हम थाप ॥

चौपाई ।

सुख दुख भोग भयो भूपाला . दाउद सब का जानत हाला ॥
श्री परमेश्वर कीन सहाई . उस के मुख निज बचन कहाई ॥
प्रभु प्रगटायो दाउद द्वारा . गीत सकल नहिं कल्पित सारा ॥
वाके गीत केर अनुवादा . बिबिध राग में करहुं प्रसादा ॥
इस्से सब जन को चतुराई . होइहै ज्ञान बिवेक भलाई ॥
बालक बृद्ध तरुण नर नारी . भूप गरीब अमीर भिखारी ॥
इन सब के हित ग्रन्थ अनूपा . है यह ज्ञान बिवेक सुरूपा ॥
सब को उचित पढ़ैं चित लाई . गावें समुझें पढ़ें सदाई ॥
इस्से सब को मिलिहै शिक्षा . जासे लेहैं सत मत दिक्षा ॥
रहिहैं जग में सुखी सदाई . अन्त स्वर्ग में जाय रहाई ॥

भजन १। राग देशावरी। गीत १।

पापिन के मत पै न चलै जो . मानुष सोई धन्य बड़े रे ॥
बैठत निन्दक की न सभा में . पापिन के पथ हो न खड़े रे ॥
ईश्वर केर व्यवस्था में सो . मगन रहत दिन रात अड़े रे ॥
ताहि व्यवस्था में दिन राती . ध्यान करेगा चित्त गड़े रे ॥
जल की धार पास तरु जैसे . ऋतु में फलत न सूखि पड़े रे ॥
सकल काम में सो नर तैसा . होइहै मोद सु भाग जड़े रे ॥
भूसी के सम हैं सब पापी . चलत बयार जु जाय उड़े रे ॥

न्याय समै मह धर्म्मि सभा में . होइहैं पापी नाहि खड़े रे ॥
धर्मिन की प्रभु चाल सु चीन्हे . चाल नष्ट होइहै बिगड़े रे ॥

भजन २। राग बसन्त। गीत २।

क्यों रे बिदेशी शोर मचाई . अनरथ चिन्ता क्यों मन भाई ॥
जग के राजा करत सामना . अरु प्रधान समुदाई ॥
करत बिचार विरुद्ध मसी के . जोइ प्रभू सुखदाई ॥
तासु मुख लेत फिराई ॥

उन की रस्सी को हम फेंकैं . बंधन तोड़ दुराई ॥
स्वर्गलोक में बैठ जु सोई . उन पै हंसत ठठाई ॥
हंसी में देत उड़ाई ॥

[illegible] शुद्ध शैल पै . निज भूपति बैठाई ॥
क्रियो अभिषिक्त सुहाई ॥

नियमन को मैं बर्णन करिहैं . प्रभु जु कहा समुझाई ॥
तू उत्पन्न हुआ है मुझ से . आज से पुत्र कहाई ॥
जगत के होहु सहाई ॥

मांग तुझे अधिकारि बनैहौं . दे भु विदेशिन की प्रभुताई ॥
तोड़िहौ लोह दण्ड से तिन को . तू घट खर्पर नाई ॥
चूर करिहौ पटकाई ॥

बुद्धिमान होओ सब भूपो . हे पृथिवी के न्याई ॥
ग्रहण करो उपदेश हमारो . डरि करु प्रभु सेवकाई ॥
कांपत आनन्द कराई ॥

सुत को चूमो जो न रिसावै . पथ से जो न नशाई ॥

उस का क्रोध तुरत भड़केगा . ता पै आस रखाई ॥
सोई नर धन्य सदाई ॥

भजन ३ । राग कल्याण । गीत ३ ।

ईश्वर से नहि मुक्ति मिलेगी . मेरे प्राण को कहत घनेरे ॥
चहुं ओर है। ढाल प्रतिष्ठा . ऊंचा करनेहार तु मेरे ॥
निज पहाड़ से उत्तर देता . ईश्वर को जब मैं कुछ टेरे ॥
लेटा सोय गया मैं जागा . रक्षा करत प्रभू सब वेरे ॥
अगणित जातिगणों से नाहीं . मैं डरिहैं। प्रभु के बल से रे ॥
मेरे चारों ओर उन्हों ने . राखि बैर में जिनहि निबेरे ॥
हे परमेश्वर मेरे ईश्वर . उठके हमें बचाव सवेरे ॥
गालन पै तु थपेड़ा मारा . मेरे सारे बैरिन केरे ॥

भजन । ४ राग सहाना । गीत ४ ।

यीशु दयानिधि मोर सुनैया ।

लोग कहें बहुतेरे ऐसे . कौन भलाइ दिखैया ॥
मेरे मन में जो अति आनन्द . वाके तुम्हीं करैया ॥
दुख से मोहि छुड़ायो तू ने . सुनि बिन्ती जगरैया ॥
निज हित धर्म्मी को अलगायो . ईश्वर त्राण करैया ॥
मेरो आस तुम्ही पै स्वामी . ना निज धर्म्म धरैया ॥
राति समय करि आसा तो पै . मैं सुख शयन करैया ॥
दिन को मोहि संभालत तूंही . निशि सपनेहु बचैया ॥
रक्षक मेरो सदा अकेला . तूही मुक्ति दिवैया ॥

भजन ५ । राग आसावरी । गीत ५ ।

हे प्रभु मेरे ध्यान को सोचो . बातन पै तुम कान लगाये ॥
मोर दुहाइ सुनो महराजा . करिहौं बिनय तुम्हार सदाये ॥
हे परमेश्वर काल्हि तु मेरा . सुनिहौ शब्द प्रभु जगराये ॥
करके सिद्ध तुम्हारे हित मैं . तकिहौं तेरे ओर हहाये ॥
मुदित न होत तु दुर्जनता से . दुष्ट न तेरे साथ रहाये ॥
गर्बी तेरे आंख के आगे . खड़े न रहिहैं हे सुखदाये ॥
सकल कुकर्मिन से हे स्वामी . रहत सदा तू दूर घिनाये ॥
झूठन को तू नाश करेगा . बधिक छली से घिन तु कराये ॥
तुमरि दया बहुताई से मैं . ऐहौं घर तुमरे हरषाये ॥
मन्दिर शुद्ध कि ओर तुझे मैं . करिहौं बिनय प्रणाम डराये ॥
हे प्रभु मेरे रिपु के कारण . अगुआ धर्म्म में तू हो जाये ॥

तुम पर जोइ भरोसा रखते . मगन रहेंगे वे मन भाये ॥
सदा हर्ष से गाया करिहैं . रखिहैा चैाकस तिनहि सदाये ॥
तेरे नाम से प्रीति रखत जो . तुम से ओइ रहत हरषाये ॥
हे परमेश्वर धर्म्मी को तू . आशिष देहैा हे सुखदाये ॥
ढाल समान कृपा से उन को. ढपिहैा तू परमेश सहाये ॥

भजन ६ । राग भैरवी । गीत ६ ।

हमैं न डपटो अपनी रिस से . हे परमेश सहाई हो ॥
तम कोप से हमैं न ताड़ो . करो दया जगराई हो ॥
मैं कुम्हलाता हे परमेश्वर . चंगा करो तु आई हो ॥
थरथरात है मेरी हड्डी . कांपत प्राण हहाई हो ॥
हे प्रभु तू फिर आओ मेरे . प्राण को लेहु बचाई हो ॥
अपनी दया के कारण हम को . हे प्रभु लेहु छुड़ाई हो ॥
स्मरण नहीं जो मृत्यु समय में . तुमरो हे सुखदाई हो ॥

धन्यवाद पाताल में तेरा . कौन करेगा जाई हो ॥
थकित भया मैं बिलपत बिलपत. बन नहि कुछुक पड़ाई हो ॥
सकल रात निज सेज भिजैहैं . अंशुआं धार मचाई हो ॥
हे प्रभु मोर खिजाहट से अब . आंख गई धुंधलाई हो ॥
सकल रिपू के कारण से अब . तन भी गई बुढ़ाई हो ॥
बिन्ती सुन प्रभु ग्रहण करेगा . प्रार्थन मोर जु आई हो ॥

भजन ७ । मल्लार । गीत ७ ।

जांचत है यिसु हे नर तेरो . इच्छा हृदय सदाई ॥
पापन से घिन कारक जोई . पूर करत वह न्याई ॥
दुर्जन पै वह क्रोधित स्वामी . धर्म्मिन पै हरषाई ॥
बालन को वह आप संभाले . दुष्टन पै रिसिआई ॥

अधम दास की रक्षा होवै . तेरे दया सदाई ॥
नाम तिहारो जग में गाऊं . स्वर्गहु में हरषाई ॥

भजन ८ । राग बसन्त ।   गीत ८ ।

सकल भूमि में तोर सहाये . कैसा नाम महान सुहाये ॥
स्वर्ग उपर तू निज महिमा को . राखो हे जगराये ॥
दूध पियत शिशु के मुख से तू . अपनी स्तुति करवाये ॥
रिपुन के हेतु देखाये ॥
प्रतिफलदायक औ रिपुगण को . तुम ही चुप्प कराये ॥
तेरे करके काम सरग बिधु . तारागण समुदाये ॥
लखूं जिहि तू ठहराये ॥
मानुष क्या है जो तू उस का . चेत करे सुखदाये ॥

मानुष का सुत क्या है उस्से . जो तू भेंट कराये ॥
सकल जग स्वामि कहाये ॥
ईश्वरता से हे प्रभु उस को . थोड़ा छोट कराये ॥
बिभव प्रतिष्ठा केर मुकुट जो . वा को तू पहिनाये ॥
सकल शुभ साज बनाये ॥
अपने करके कामन केरा . ताहि दियो प्रभुताये ॥
सब कुछ पग तर कीनो उस के . पशु पक्षी समुदाये ॥
वारि नभ भूचर आये ॥

भजन ९ । राग गौरी । गीत ९ ।

स्तुति करिहैं मैं सारे मन से . ईश्वर की हरषाई ॥
तेरे सारे अद्भुत को मैं . बर्णन करिहैं आई ॥

न्याय हेतु सिंहासन को वह . स्थापित किय जगराई ॥
धर्म्म साथ सुबिचार करेगा . जग का जीवनदाई ॥
न्याय करेगा लोगन केरा . श्री प्रभु साथ खराई ॥
जोइ सताये हैं उन के हित . हुइहै स्थान उंचाई ॥
दुःख समै में तू ही ऊंचा . स्थान होउगे आई ॥
तेरे नाम के जाननहारे . तुम पै आस लगाई ॥
अपने खोजिन को नहि स्वामी . कबहूं देत भुलाई ॥
बास करत सैहून में जोई . श्री परमेश सहाई ॥
उस के अद्भुत कामों को तू . बर्णो महिमा गाई ॥
लेखा लेत रुधिर का उस ने . उस की सुधि न भुलाई ॥
श्री प्रभु ईश्वर दुखियन केरी . भूला नहीं दोहाई ॥
बैरिन से मैं हूं दुख पावत . देख दया कर आई ॥

मृत्यु द्वार से तूहि उठैया . मेरो तूहि सहाई ॥
जाते मैं सैहून सुता के . द्वारें में सुखदाई ॥
तेरी सारी महिमा बर्णों . मुक्ती को अपनाई ॥

भजन १० । राग सिंदूरा । गीत १० ।

है नहि खोजी ईश्वर केरा . दुष्ट घमण्ड बढ़ाई ॥
उस की सारी चिन्ता ऐसी . ईश्वर है नहि भाई ॥
उस के मारग सकल घड़ी में . स्थिर निर्बाधि रहाई ॥
ऊंचा सदा दृष्टि से उस के . हैगा तेरो न्याई ॥
अपने सारे बैरिन पै वह . मारत फूंक सदाई ॥
मैं न टलूंगा ऐसा अपने . मन में हरषि कहाई ॥
पीढ़ी से मैं पीढ़ी लों नहि . पड़िहौं बिपति मझाई॥
उस का मुख धिक्कार कपट अरु . अनि अंधेर भराई ॥

उस के जीभ तर है रहता . सब अपकार बुराई ॥
गांव के टूके में वह बैठत . छिपे जगह में जाई ॥
घात करत निर्दोषिन का वह . बधिक तुल्य दुखदाई ॥
उस की आंखें दुखियन के हित . रहती सदा छिपाई ॥
झाड़ी में अरु छिपी जगह में . दुके सिंह की नाई ॥
पकड़न के हित दुखियन को वह . रहता ताक लगाई ॥
दुखियन को वह जाल में अपने . खैंचके पकड़त भाई ॥
दबके बैठ जात हैं उस के . बल से दुखी गिराई ॥
ईश्वर भूल गया है ऐसा . वह मन को समझाई ॥
उस ने कभी नहीं है देखा . निज मुखड़ा भि छिपाई ॥
सर्बशक्तियुत हे परमेश्वर . उठ निज हाथ बढ़ाई ॥
दुखियन को नहि भूलो स्वामी . दुख से लेहु बचाई ॥
इस कारण से है प्रभु तुम को . दुष्ट तुच्छ समझाई ॥

पूंछ पांछ नाहिं तू कुछ करिहै . यही जानि न डराई ॥
जाते अपने कर में रक्खें . बस तुमरे सब आई ॥
तू अपकार खिजाहट को प्रभु . देखत है चित लाई ॥
दुःखी अपना बोझा तुम पै . छोड़त है सुखदाई ॥
तुही अनाथन का उपकारी . भाई बन्धु सहाई ॥
तुम ही सब के रक्षक स्वामी . अघ के नाशक आई ॥

भजन ११ । राग सिंदूरा गीत ११ ।

प्रभु पै मोर भरोस निराला . जोई दीन दयाला ॥
क्योंकर मेरे प्राण से कहता . वह तो आप बिहाला ॥
चिड़िया के सम तू निज गिरि पै . भाग जाहु ततकाला ॥
अंधियारे में खरे जनों के . मारन हेत कराला ॥
दुर्जन अपना धनुष चढ़ावत . रोदे पै शर माला ॥

अपने शुद्ध मन्दिर में रहता . ईश्वर जगत भुआला ॥
स्वर्ग उपर सिंहासन उस का . शोभित रहत बिशाला ॥
उस की आंख पलक हैं परखत . मानुष बंश कि चाला ॥
दुष्ट अंधेर के प्रेमी से वह . घिन करता सब काला ॥
जांचेगा सब धर्म्मि जनों को . ईश्वर जोइ कृपाला ॥
गन्धक आग भयङ्कर आंधी . बरसैहै वह झाला ॥
दुष्टन पै अरु होइहै उन का . एही भाग पियाला ॥
राखत प्रीति धर्म्म से स्वामी . धर्म्मी आप विशाला ॥
उस का रूप खरे जन को रे . देखिहै शुभग रसाला ॥

भजन १२ । राग भैरवी । गीत १२ ।

हे परमेश्वर सदा बचाओ . तू ही राखनहारे ॥

ईश्वरीय जन घट गये सारे . नर के बंश मझारे ॥
जो बिश्वासी लोग भये सो . दुर्बल छीण दुखारे ॥
लल्लो चप्पो करनेहारे . ओठन को भि सिधारे ॥
बड़बड़ात है जीभ जु उस को . काटि करे प्रभु न्यारे ॥
कहा जिन्हों ने जीतेंगे हम . अपनी जीभ खुआरे ॥
ओठ हमार हमारे हैंगे . है प्रभु कौन हमारे ॥
ठंढी सांस रंक जन केरा . अरु अंधेर बड़ा रे ॥
इसी हेतु से प्रभू कहैगा . मैं अब उठनेहारे ॥
उस की जो अभिलाषा करिहै. रखिहौं शरण मझारे ॥
भट्टी के घड़िया में ताई . गई जु चांदी जारे ॥
सात बार जो निर्मल की गइ . शुद्ध भई निरवारे ॥
उस के सम अति शुद्ध बचन है . ईश्वर का मनुहारे ॥

भजन १३ । राग पूरबी । गीत १३ ।

कब लों तु भूलेगा प्रभु मोको . हे ईश्वर जगतार हो ॥
हम से अपना मुख तू छिपैहै . कब लों हे करतार हो ॥
कब लों शोक करों मन में मैं . कब लों करौं बिचार हो ॥
उभरैगा रिपु मेरा हम पै . सुनु करि दृष्टि हमार हो ॥
मृत्यु नींद में सोइ न जाऊं . आंख करो उंजियार हो ॥
मेरे शत्रु कहें नहि उस को . जीत लिया यह बार हो ॥
हर्षित हो न टले से हमरे . मेरे सतावनहार हो ॥
आस भरोस दया पै तेरे . मैं राखा निश्चवार हो ॥
तेरे मुक्ति से हर्षित होवे . हमरो चित्त अपार हो ॥
ईश्वर के हित मैं अब गैहों . जोइ बचावनहार हो ॥

मो पै सोइ भलाई कीनी . जग के जोइ अधार हो ॥

भजन १४ । राग तोटक । गीत १४।

नहि कोइ प्रभू परमेश्वर है . अस मूढ़ कहै अपने मन में ॥
वह काम बिगाड़ घिनैान करे . नहि कोइ सुकर्म्मि अहै जग में ॥
नर बंशन पै प्रभु झांकत है . वह बैठि सुस्वर्ग सिंहासन में ॥
प्रभु को कोइ ढूंढ़त है कि नहीं . यह राखत बात निगाहन में ॥
सब के सब हैं बिगड़े भटके . नहि एकहु धर्म्मि रहा पथ में ॥
सब पापि न जानत क्या हमरे . जन को वह खात सुरोटिसमें ॥
प्रभु नाम न लेत डरात वहां . वह है प्रभु धर्म्मि सुबंशन में ॥
तुम दुःखि बिचार अभाव कियो . प्रभु के जु अहैं शरणागत में ॥
अहहा अपने बंधुआ जन के . नियरे प्रभु के फिर आवन में ॥

भजन १५ । राग गौरी । गीत १५।

कौन रहेगा हे प्रभु तेरे . तम्बू में जग के सुखदानी ॥
तेरे शुद्ध शैल पै स्वामी . बास करेगा कौन अमानी ॥
मन से सीधा चलता जोई . धर्म्म करत सच बोलत बानी ॥
निज परोसिको हानि न कीनी. चुगली नहीं जीभ से ठानी ॥
निज परोसि पै दोष न लायो . करत सदा सब काम सयानी ॥
उस की आंखन में है निन्दित . जोइ निकम्मा मूढ़ नदानी ॥
ईश्वर के डरवैयन केरी . करत प्रतिष्ठा मन सुख मानी ॥
हानिकारि किरिया जो खाई . तासे पलटेगा नहि ज्ञानी ॥
रोकड़ ब्याज हेत नहि देहै . सदा भलाई म रहत लगानी ॥
दोष रहित हैं लोग जु उन से . लेत अकोर नहीं वह तानी ॥

करता यही सदा लों सोई . नाहि टलेगा होय सुठानी ॥

भजन १६ । राग भैरवी । गीत१६।

तुम पै मैं ने रखा भरोसा . मेरी कर रखवारी ॥
हे रे प्राण कहा तू प्रभु से . तू ही प्रभु सुखकारी ॥
तुम बिन नाहि भलाई मेरी . हे ईश्वर आधारी ॥
पृथिवी पर जो साधू उन के . संग मोर सुख सारी ॥
गठबंधन किय आन देव संग . तासु शोक बढ़ियारी ॥
उन के रुधिर तपावन माहीं . मैं तपिहैं नहि हारी ॥
उन का नाम न लेहैं अपने . ओठन से सुपुकारी ॥
नियमित भाग कटोरा मेरा . है ईश्वर जगतारी ॥
प्रभु मम भाग बढ़ावनहारा . सुथरा मम अधिकारी ॥

ईश्वर को मैं सदा अपाने . समुहे राखि बिचारी ॥
दहिने हाथ हमारे है वह . मैं नहि टरनेहारी ॥
इस से मगन हुआ मन मेरा . बिभव अनन्दित कारी ॥
मेरो देह चैन से रहिहै . प्रभु दाया अनुसारी ॥
प्राण क़बर को नहीं हमारे . सौंपेंगे सुखकारी ॥
धर्म्मी को नहि सड़ने देहै . करिहै दया सकारी ॥
जीवन केरा पन्थ बतैहै . हम से तू परचारी ॥
आनन्द की भरपूरी तेरे . आगे रहत सदा री ॥
जोइ बिलास सनातन का है . दहिने हाथ तिहारी ॥

भजन १७ । राग भैरवी । गीत १७ ।

हे ईश्वर मैं तुझे पुकारा . तू ही सुनिहै आई ॥

कान लगाय बचन सुन मेरा . अद्भुत दया दिखाई ॥
दहिने कर से भक्तन को तू . रिपु से लेत बचाई ॥
आंख कि पुतली सम तू मेरी . रक्षा कर जगराई ॥
निज पंखों की छाया नीचे . मोको लेहु छिपाई ॥
जिन दुष्टन ने हमैं उजारा . उस से रख अलगाई ॥
मेरे सारे प्राण के बैरी . घेरि हैं हम को आई ॥
चिल्लाने पै सुरत लगाओ . धर्म्म सुनो सुखदाई ॥
कपट रहित ओठन से बिन्ती . मेरी सुन चित लाई ॥
तेरे आगे से निकलेगा . न्याय हमारा जाई ॥
देखैंगी अब आंखैं तेरी . सारी जोइ खराई ॥
अब वे हमरे डग में हम को . घेरत हैं समुदाई ॥
हम पै आंख लगावत जासे . जावैं भू झटकाई ॥

उस के सन्मुख जाय प्रभू तू . उस को देहु गुआई ॥
दुर्जन से मम प्राण बचाओ . अपनो खड्ग उठाई ॥
अपने कर के साथ नरों से . मोको लेहु बचाई ॥
नर से जग में भाग उन्हों का . इस जीवन में आई ॥
छिपे हुए तू धन से अपने . उन का पेट भराई ॥
हुइहैं तुष्ट बंश से ओई . जो कुछ धन बच जाई ॥
अपने बेटे पोतों के हित . छोड़ेंगे सुखदाई ॥
तेरा मुख देखिहौं मैं स्वामी . धर्म्म मांझ हर्षाई ॥
जब जागूंगा रूप से तेरे . हुइहौं तृप्त सदाई ॥

भजन १८ । राग कजली । गीत १८ ।

हे परमेश्वर हे बल मेरे . तुम को प्यार करैया ॥
मुक्ति किसींग स्थान जो ऊंचा . मेरो प्रभू छुड़ैया ॥

गढ़ चटान है ढाल हमारो . तापै आस रखैया ॥
स्तुति के योग्य प्रभू को टेरिहैं . रिपु से सोइ बचैया ॥
दुर्जनता की बाढ़ डरावै . मृत्यु बंध घेरवैया ॥
बंधन मोहि समाधि के घेरा . मोहि मृति फंद फंसैया ॥
मैं सकेति में प्रभु को टेरिहैं . देहैं प्रभु कि दुहैया ॥
निज मन्दिर से मोर दुहाई . सब वह शब्द सुनैया ॥
थरथरात तब पृथिवी पर्बत . जब वह क्रोध करैया ॥
तासु क्रोध से धुआं उठा है . मुख से आग हहैया ॥
भस्म करत अंगारे उस से . धधकत देखि पड़ैया ॥
स्वर्ग झुकाया नीचे उतरा . पग तर मेघ रखैया ॥
चढ़ि करोबि पै वायू के वह . डैनों पै उड़वैया ॥
चारों ओर अंधेरे को वह . अपन ओट ठहरैया ॥
आपनो आइ करैया ॥

तब वह अपनो बाण चलायो . छिन्न भिन्न करवैया ॥
बिजली को चमकाय उन्हों को. सो घबरा डरवैया ॥
तब महान प्रभु गर्जि स्वर्ग से . अपनो शब्द कहैया ॥
हे प्रभु तेरे डांट डपट से . कुपित श्वांस बहुतैया ॥
खुल गई जग की नेव दिखानी . जल के नालि नलैया ॥
ऊपर से निज हाथ बढ़ैहै . हम को खींच लिवैया ॥
बड़ पानी से अरु रिपुगण से . हम को सोइ बचैया ॥
ईश्वर जीवत है वह मेरा . धन्य चटान सदैया ॥
मेरे मुक्ति का ईश्वर स्वामी . सोइ महान होवैया ॥
इस कारण मैं जातिगणों में . तेरो धन्य मनैया ॥
हे परमेश्वर नाम कि तेरी . स्तुति की गीत गवैया ॥

भजन १९ । राग लाउनी ।　　　गीत १९।

ईश्वर की महिमा का बर्णन . करते स्वर्ग सदाई ॥
उस के हाथ कि सारि क्रिया को. देत अकाश दिखाई ॥
दिन दिन से शुभ बात करेगा . निश निश को दिखलाई ॥
बचन कथन नहि उन में कुछ है . तासु न शब्द सुनाई ॥
सारी पृथिवी में उन केरी . रेखा निकलि सुहाई ॥
जगत अन्त में है उन केरे . सकल बचन समुदाई ॥
उन में सूरज के हित तम्बू . रक्खा है वह आई ॥
दूल्हा सम निकलत कोठरी से . दौड़त पथ हरषाई ॥
स्वर्ग खूंट से निकलन उन का . चक्र अन्त लों आई ॥
उस के घाम में या जग माहीं . कुछ नहि रहत छिपाई ॥

प्रभु की सच्ची साक्षी देती . भोलन की चतुराई ॥
ठीक बिधी हैं ईश्वर केरी . हर्षित चित्त कराई ॥
प्रभु की आज्ञा शुद्ध नयन को . करती हैं उंजराई ॥
भय पवित्र परमेश्वर केरा . सदा काल ठहराई ॥
ईश्वर केर बिचार जु सारे . सच्च धर्म्ममय आई ॥
सोने से अति चोखे हैं वे . मधु से अधिक मिठाई ॥
इस से अधिक सुदाम तिहारो . उन से जात चेताई ॥
उन के पालन करने माहीं . हैगा फल बहुताई ॥
भूल चूक का को समझैया . तुम बिन हे सुखदाई ॥
गुप्त पाप से शुद्ध करो तू . हे ईश्वर जगराई ॥
साहस के पापन से अपने . दास को लेहु बचाई ॥
उन को हम पै राज्य न करने . दे हम सिद्ध हुआई ॥
बहुत पाप से मैं निर्दोषी . हुइहैं तब बिलसाई ॥

मेरे मुख की बातचीत का . सारा ध्यान जु आई ॥
आह्य तिहारे आगे हुइहै . हे त्राता मुददाई ॥

भजन २० । राग सहाना । गीत २० ।

बिपति समै में सुनै तिहारो . श्री परमेश्वर जगपति प्यारे ॥
तेरे मन के सम तोहि देवै . पुरवै तोर बिचार सुसारे ॥
प्रभु के नाम से झंडा गाड़ैं . हर्षित हो लखि मुक्ति तिहारे ॥
पुरवै सब बिन्ती प्रभु तेरो . मैं अब जाना हो करतारे ॥
दहिने कर के मुक्ति दे बल से . अभिषिक्तन का है रखवारे ॥
अपने शुद्ध स्वर्ग से सुनिहै . उस को ईश्वर जो जगतारे ॥
गाड़िन का कोइ घोड़न केरा . स्मरण करत मन में सब कारे ॥
हम तो अपने ईश्वर केरे . स्मरण करेंगे नाम पुकारे ॥

प्रभू बचाओ जो दिन टरो . तो दिन नृप सुने लय हमारे ॥

भजन २१ । राग भैरवी । गीत २१ ।

तेरे बल से आनन्द हुइहै . हे ईश्वर जगतारा ॥
क्या ही बहुत मगन वह हुइहै . पाय सुमुक्ति तिहारा ॥
उस के मन की इच्छा तू ने . उसे दिया है प्यारा ॥
उस के ओठन की बिन्ती को . नहि रोकै करतारा ॥
तू भलाइ की आशिष के संग . सन्मुख आवनहारा ॥
उस के सिर पै शुद्ध कनक का . रखिहो मुकुट संवारा ॥
सदा काल के जीवन की वह . मांगि पाय बढ़ियारा ॥
बिभव बड़ा अब हुइहै उस का . मुक्ती से जु तिहारा ॥
महिमा और प्रतिष्ठा उस के . ऊपर रखिहो सारा ॥
सदा काल के आशिष उस को . तू ठहरावनहारा ॥

५0

निज स्वरूप से हर्षित करिहै। . उस को हे करतारा ॥
राजा करत भरोसा आसा . ईश्वर पै सब कारा ॥
अति महान की दाया से वह . जैहै कबहुं न तारा ॥
हे परमेश्वर अपने बल से . हे। महान दुखहारा ॥
तेरे बल की स्तुति मैं गैहैां . करब बड़ाइ तिहारा ॥

भजन २२ । राग लाउनी । गीत २२।

छोड़ा क्यों हम को तू मेरे . ईश्वर हे सुखदाता हो ॥
चिल्लाने अरु मुक्ती से मम . क्यों तू दूर रहाता हो ॥
दिन को टेरूं तू नहि सुनता . रात को चैन न आता हो ॥
बास करत इसरायल केरी . स्तुति में शुद्ध सुहाता हो ॥
पितर हमारे किये। भरोसा . तुम पै तिन्हैं छुड़ाता हो ॥

मनुज नहीं बरु कीड़ा मैं हूं . नर निन्दा तुच्छाता हो ॥
देखि हमैं सब सीस हिलाके . कहत हंसत ठिठियाता हो ॥
प्रभु पै करो भरोसा उस को . सो छुड़ाय हरषाता हो ॥
जल के सम मैं गया बहाया . सब हड्डी अलगाता हो ॥
मोम कि नाईं मन अब मेरा . हृदय बीच पिघलाता हो ॥
ठिकरा सम मम सूखि पराक्रम. जीभ तालु लपटाता हो ॥
मृत्यु धूल में लावेगा तू . मुझ को मुक्ति सुदाता हो ॥
दुष्ट मंडली घेर लियो मोहि . और श्वान के ब्राता हो ॥
मेरे हाथ पांव को सारे . बेध दियो दुख पाता हो ॥
मैं निज हड्डिन को गिन सक्ता . घूरि हमैं वे लखाता हो ॥
मम बागे पै चिट्ठी डालत . बस्त्र हमार बंटाता हो ॥
हम से दूर रहो नहि स्वामी . तुही मोर बल दाता हो ॥

आओ तुरत सहाय के कारण . हे मेरे सुखदाता हो ॥
अस्त्र शस्त्र अरु कुत्तन से मम. प्राण बचाव तु त्राता हो ॥

भजन २३ । राग कल्याण । गीत २३ ।

योसु मसी की मैं हूं भेड़ी . आनन्द साथ रहूं हरषाई ॥
अच्छा मेरो चरावनहारा . चाहत है मोहिं जो चित लाई ॥
खूब चरावत है वह मोको . ले ले नाम बुलावत आई ॥
कोमल है चरगाह हमारो . मो पर दृष्टि उसी की आई ॥
भोजन सुरस हमारो क्या हो . तासे होत हृदय दृढ़ताई ॥
मोठ महा सुख सोतन माहीं . देत हमारो प्यास बुझाई ॥
परम सुखी हम वाको भेड़ो . आनन्द क्यों न कहूं जग आई॥
मरके स्वर्ग भेड़गृह जैहैं . योसु मसी की गोद सुहाई ॥
सखबिलास जहं आत्मिक पैहैं. योसु मसी का दास कहाई ॥

वाके गेह प्रवेश करे सो . कर मन शुद्ध जु आई ॥
मिथ्या पै मन जो नहि लायो . छल हित शपथ न खाई ॥
योसु मसी का लोहू जाके . पाप धोय विलसाई ॥
मुक्ति केर जो दाता तासे . धर्म असीस सो पाई ॥
करो फाटको निज शिर ऊंचा . दिव के द्वार उंचाई ॥
विभव महा नृप भीतर आवै . सिद्ध करो पथ आई ॥
महा बिभव से सो नृप आवत . योसू जोइ कहाई ॥
जो बलवंत मुक्ति के दानो . सर्व समर्थी आई ॥
मुक्ति देन को आयो तो वह . रूप गरीब बनाई ॥
न्याय करन को जो वह ऐहै . भीषण रूप दिखाई ॥
मन के द्वार तुरत हम खोलें . योसू आस लगाई ॥
बिभवमहा नृपसो वह आवत . दीन बंधु जगराई ॥

खोलैं द्वार करैं तैयारी . मारग को हरषाई ॥

भजन २५ । देसावरी । गीत २५।

हे प्रभु मैं निज आतम तेरे . ओर उठावत हूं जगराई ॥
लज्जित मोको होन न देवो . तोपर आस किया हरषाई ॥
तेरे जोहनहारन में कोइ . लज्जित होइहैं नाहि सदाई ॥
अपन नाम के हेतु दया करि . सत्पथमें मोहि देहु चलाई ॥
करिहौ तू अगुवाई वाको . तुम से जो सब काल डराई ॥
हे प्रभु मैं हूं दुखी अकेला . मेरी ओर फिरो चित लाई ॥
पीड़ा दुःख हमारो देखो . पाप क्षमा कर हे सुखदाई ॥
वाके बंश भूमि अधिकारी . होइहैं जो उन के भयदाई ॥
तिन के साथ मित्रता प्रभु की . रहत सदा सुख आनंददाई ॥

भजन २६ । लाउनी । गीत २६ ।

प्रभु पर आस भरोस किया मैं . नाहिं हटूं भटकाए रे ॥
परख हृदै तूं हे प्रभु मेरा . मन जांचहु हरषाए रे ॥
तोर दया मम आंखन आगे . रहत सदा विलसाए रे ॥
पापिन केर जु मण्डलि तासे . घिन मैं करहुं डहाए रे ॥
दुष्टन के मैं साथ न बैठूं . मोहि कुमति नहि भाए रे ॥
हे प्रभु मैं तव गेह निवासा . प्रेम किया चित लाए रे ॥
पापिनसाथ मिलाओ नहि तूं . प्रेम हमार सुहाए रे ॥
मण्डलियों बिच हे प्रभु तेरा . धन्य करूं यश गाए रे ॥

भजन २७ । बिहार । गीत २७ ।

है यिसु मेरा मुक्ति उंजेरा . कासन मैं डरपूं जग आई ॥

जीवन का गढ़ है प्रभु मेरो . कासन मैं भय मानि डराई ॥
बिन्ती एक किया प्रभु से मैं . वाके खोज रहूं चित लाई ॥
ईश्वर के घर मांझ प्रभू की . देखहुं जीवन लों सुंदराई ॥
आपति के दिन सो निज डेरे . आड़ में लेहै मोहि छिपाई ॥
मोर सुनो प्रभु हे करि दाया . उत्तर दे मोहि तूं समझाई ॥
हे नर खोज करो मुंह मेरो . आप कह्यो जब तू जगराई ॥
मानस मोर कहा तब स्वामी . खोजत हैं मुंह तोर सुहाई ॥
आनन आपन क्रोध छिपायो . आपन दास न देहु हटाई ॥
मात पिता जब त्यागहिं मोको . तब निज गेह प्रभू बुलवाई ॥
तोर सुरक्षा की मोहि आसा . होत न तो हम जात हहाई ॥
दृढ़ से बाट यिसू कर जोहो . देहै शक्ति हृदै तव राई ॥

जो तूं मौन रहै प्रभु मोसे . गिरिहौं गर्त्ते भुलाई ॥
देहुं दुहाई जो प्रभु तेरो . तो सुन कान लगाई ॥
स्वर्ग श्रोर जो हाथ उठाऊं . तब तूं करहु सहाई ॥
दुष्ट कुकर्म्मी साथ पड़ोसी . बात करैं कुशलाई ॥
ऊपर से सु बिचार दिखावैं . मन में शोचि बुराई ॥
उठिहौ तूंहि बिरुद्ध उन्होंके . न्याय करोगे आई ॥
है प्रभु धन्य सोई जो मेरो . विनय सुन्यो हर्षाई ॥
मैं बिश्वास कियो है ता पर . श्रौर सहारा पाई ॥
ईश्वर है निज दास बोलको . श्रो रक्षा गढ़ आई ॥
दासन को सो देत असीसा . श्रौर मुक्ति हुलसाई ॥
भेड़िन को निज सोइ चरावै . पालत सदा सहाई ॥

भजन २९ । बसन्त । गीत २९ ।

ईश्वर शब्द तुफ़ान घटा में . गरजत है घहराई ॥
पानि बड़े पै जो महिमा का . शक्तिमता गरजाई ॥
ईश्वर केर सु शब्द जोई सो . साथ बिभौ बल आई ॥
तोड़त पेड़ बड़े वह ताको . सम शिशु भैंस कुदाई ॥
चीरत आग लवर को सोई . बन को देत कंपाई ॥
गाभ गिराय सकै मृग केरो . बन पतझार कराई ॥
मंदिर वाके जाय कहें हैं . ईश्वर होय बड़ाई ॥
ईश्वर जो महराज सदा का . बैठ जु बाढ़ सुहाई ॥
देत अशीष कुशल बल केरो . निज जन को हरषाई ॥

भजन ३० । खेमटा । गीत ३० ।

दीन दहाई तोर प्रभ हम ॥

गर्त गिरनहारन में मोको . तुमहि जिलायो खोर॥
जीवन है प्रभु केर कृपा में . प्रभु रिसि है पल थोर॥
होवे सांझ बिलाप जु तौभी . भावि महा सुख भोर॥
निज बढ़ती में मैं अस भाष्यो . कबहुं टलूं नाहि ओर॥
आपन आनन जो तु छिपायो . गै घबड़ा चित मोर॥
मैं प्रभु दाया कारण तोको . बहुत पुकारूं जोर॥
क्या जब लाभ लहू में मेरे . गिरिहैं गर्त कुठौर॥
धूलि करेगी सत्यपना का . बर्णन क्या स्तुति तोर॥
धन्यवाद करिहैं प्रभु तेरी . सदा प्रेम मन बोर॥
आनंद के नृति से तुम स्वामी . पलटेहु रोदन मोर॥

भजन ३१ । बिहाग राग । गीत ३१ ।

कौन भरोस प्रभू हम तापै . लज्जित होन न देहु सदाई॥

निज श्रवरान मम ओर झुकाओ . झट पट मोहि तुम लेहु बचाई ॥
निज आतम हम हाथ तिहारे . सौंपत हैं लखु हे जगराई ॥
शोक भरो मम जीवन स्वामी . वयस कराहन मांझ नशाई ॥
डगमगात बल मम अघ कारण . सब गये हाड़ हमार सुखाई ॥
भुला दिये गय शव सम मन से . भाजन भग्न उपम हम आई ॥
बहुत जनन से मैं सुनि निंदा . चहुंदिश देख्यो भय घबड़ाई ॥
परामर्श मम कोन परस्पर . सब बिरोध जब चित्त समाई ॥
प्राण लेन मम युक्ति किया तब . समय हमारो तव कर आई ॥
रिपु अरु पीछा करनहार से . प्रभु अब मोको लेहु छुटाई ॥
प्रभु से प्रेम लगाय मगन हो . हे सब प्रभु के साधु सदाई ॥

भजन ३२ । गौडिया पीलो राग । गीत ३२ ।

पापन को परमेश्वर जाके . कोन नहीं कुछ लेख गमारे ॥
शिक्षा देगो तूं तेहि मारग . जेहि चल सो अगुवाइ हमारे ॥
दुष्टन पै अति संकट आपद . पड़त विविध जग दुःख तमारे ॥
रखनेहार आस निज जोई . तेहि प्रभु घेरि दया सुसमारे ॥
धरमी जन प्रभु से हरषाओ . करहु अनंद महा जगमारे ॥
आपन मैं जु बुराई तोपै . करिहैं प्रगट कहा प्रथमा रे ॥
निज अपराधन को प्रभु आगे . मैं मनिहैं तजि धूम धमा रे ॥
पाप अधर्म महा प्रभु मेरो . कोन तुही जगराज क्षमा रे ॥

भजन ३३ । भैरवी । गीत ३३ ।

सज्जन लोगन को यह सोहत . ईश्वर की स्तुति सारी ॥
हे सज्जन सब गाय बजाके . मंगल शब्द उचारी ॥

प्रभु को भजो भजो अरु वाके . सत्य बचन सुखकारी ॥
जो हैं सारे कारज वाके . सोइ धरम अनुसारी ॥
धर्म न्याय से मानुष ऊपर . राखत प्रेम अपारी ॥
ईश्वर केर दया से पृथिवी . भरी हुई है सारी ॥
वाके बचन से सबरे जन्मे . भूमि नखत तिमिरारी ॥
सब पृथिवी के रहनेहारे . प्रभु से डरैं बिचारी ॥
प्रभु ने कहा होय जब तबहीं . सब कुछ भयो प्रचारी ॥
प्रभु की चिंता सदा रहैंगी . स्थिर जो हैं दुखहारी ॥
वह संतान धन्य है क्याही . प्रभु पति जाहि सिधारी ॥
अपने हेतु चुन्यो प्रभु जिन को . सो हैं धन्य सुखारी ॥
सब मानुष को प्रभु ने देखा . दिव से दृष्टि पसारी ॥
सारे कर्म ओर प्रभु उन के . ध्यान रखत हितकारी ॥

रखत भरोसा शुद्ध नाम पै . प्रभु के मगन बिचारी ॥

भजन ३४ । तोटक छंद । गीत ३४।

ईश्वर पूरण आस करै . अरु संतन केर सुने जु दुहाई ॥
ईश्वर को हम खोज कियो अरु . सो हमरी प्रभु कीन सुनाई ॥
सबरे भय से जु छुटाय दियो . मोहि दीन दयाल करी दयताई ॥
यह दुःखि चिलाय उठा प्रभु ने . मोहि सर्ब बिपत्ति से लीन बचाई ॥
तेहि के भय भीत चहूंदिश में . प्रभु दूत सुछावनि कीन जु आई ॥
प्रभु ने तिन को जु छुटाय दियो . चहि देखहु ईश्वर की दयताई ॥
प्रभु पै सुभरोस रखै नर जो . जग धन्य महा वह अद्भुत आई ॥
हे सब संत डरो प्रभु से . कुछ नाहि कमी प्रभु से जु डराई ॥
धर्म्मिन पै बहु क्लेश पड़ैं . प्रभु सेवक प्राण को लेत बचाई ॥

भजन ३५ । बसंत केदारा । गीत ३५ ।

बैरिन से जग मांझ हमारो . योसु बचावनहार तु आई ॥
रक्षा हेतु खड़ा प्रभु होओ . तारणहार तु आई ॥
बैरिन को प्रभु रोक हमारे . मो को लेहु बचाई ॥
योसु त्राणि जगराई ॥
भुस की नांइ हवा में उन के . छल बल देहु उड़ाई ॥
मोर भरोसा है तुम ऊपर . तुम ही रक्षक आई ॥
और नहि कोइ सहाई ॥
झूठे साखि उठत अब स्वामी . झूठे दोष लगाई ॥
करत बदी वे धर्म की संतो . कब तक करिहैं हंसाई ॥
तुरत मोहि लेहु बचाई ॥

मिलहि सुख मोद भलाई ॥
हे प्रभु यीसु न दूर तु होश्रो . कर मेरो ख़बर सदाई ॥
मोपर मेरे बैरिन केरो . होन न देहु जिताई ॥
सबन के स्वामि तु श्राई ॥

भजन ३६ । राग झम्मड़ । गीत ३६ ।

तुमहि दयाल हमार सहाई ॥
तेरी दया सरग में स्वामी . घन लों श्रहे सचाई ॥
सर्वशक्तियुत पर्बत के सम . तेरो धर्म्म सुहाई ॥
कैस अमूल्य दया है तेरी . मानुष बंश सदाई ॥
तेरे पंख की छाया नीचे . सकत भरोस कराई ॥
होइहै तुष्ट तिहारे घर की . चिकनाई को पाई ॥

सुख सरिता से उन्हें पिलैहै . तुम ही हे सुखदाई ॥
जीवन सोता पास तिहारे . सदा रहत है सांई ॥
उंजियारे से तेरे देखिहैं . हम उंजियार सुहाई ॥
खर मन में तू धर्म्म ज्ञानि पै . अपनी दया बढ़ाई ॥
दुर्जन कर मोहि टालि न पावै . ऐसी करो उपाई ॥
पग घमंड का मेरे ऊपर . आवन दे नहि राई ॥
पापी गये गिराये जहं से . उठि कबहूं न सकाई ॥

भजन ३७ । राग झम्मड़ । गीत ३७ ।

रखहु भरोस प्रभू पर भाई ॥
पालन पाउ सचाई से तू . भलो करो चित लाई ॥
वास देश में करो प्रभु से . हर्षित रहो सदाई ॥

उजियाला सम धम्म तिहारा . दुपहर के सम न्याई ॥
प्रगट करेगा बाट जु प्रभु की . जो है मैान हुवाई ॥
भाग्यमान नर है निज पथ में . करत कुमंत्रघाताई ॥
उस्से नहीं कुढ़ो तू प्यारे . क्रोध को देहु बिहाई ॥
केवल करन बुराई के हित . नहीं कुढ़ो तु जाई ॥
सारे पापी काटे जैहैं . पैहैं दुःख सदाई ॥
पृथिवी के अधिकारी होइहैं . प्रभु पै आस जु लाई ॥
दीन भूमि अधिकारी होइहैं . मगन कुशल से आई ॥
नर के डग को प्रभु स्थिर करता . तासु चाल हरषाई ॥
उस का स्थान खोजिहो तनिको . दुष्ट न वह हो जाई ॥
वह तो गिरके गिरा न रहिहै . प्रभु कर थाम उठाई ॥
आस लगाय प्रभू का मारग . पालन करो सदाई ॥

पृ०

५०

पृथिवी के अधिकार के कारण . तुमै बढ़े है सांई ॥
काटे जैहैं दुष्ट जभी तू . देखिहै वह फल पाई ॥
दुर्जन को अंधेरी निज को . हरित पेड़ की नाई ॥
देखा जो मिट्टी में उगता . फैलत बढ़त हहाई ॥
तौभी जात रहा वह देखो . कबहुं रहा न जनाई ॥
मैं ने उस को ढूंढा अति सो . कबहुं कहीं न मिलाई ॥
सिद्ध को चीन्ह खरे को देखो . कुशली नर हरषाई ॥
सब प्रकार से पापी नशिहैं . दुष्ट अन्त कट जाई ॥
दुःख समै में धर्मिन केरा . गढ़ रक्षक प्रभु आई ॥
धर्म्मी मुक्ति प्रभू से पैहैं . प्रभु जी करत सहाई ॥
दुष्टन से प्रभु तिन्हें छुटाके . दुख से लेत बचाई ॥

दण्ड न क्रोध से दे तू मोको . ईश्वर कृपा बिशाला ॥
मुझ पर न्याय न पूरा कर मैं . दुखित लचार निराला ॥
अपराधों का भार जु मेरा . मोको करत बिहाला ॥
मेरा मन जो पतित लचारा . लहै न सुख केहु काला ॥
तुम से है प्रभु मेरी आसा . तुम ही तारणवाला ॥
हे प्रभु सुनो दुहाई मेरी . दूर करो भ्रमजाला ॥
निज अपराधन को मन खोलो . मानूं मैं जगपाला ॥
मोपै करो दया की दृष्टी . मोहि न त्यागु दयाला ॥
हम से दूर न हो कर जलदी . मम निस्तार भुआला ॥
आसी को नहि भूलो स्वामी . क्षमा करो अघमाला ॥

भजन ३९ । राग बिहाग । गीत ३९ ।

बिपति समै प्रभु छोड़ि तुमै मैं . किसे पुकारूं चानी ॥

५०

अंतर में मन तप्त हमारो . सोचत आग भभानो ॥
अपनि जीभ से तो हम बोले . अपनो अंत न जानी ॥
मेरा अन्त होइगा कब लों . हैं दिन मान कितानी ॥
हे प्रभु देख तु मेरी कीनी . वय बित्ता परमानी ॥
तेरे आगे जीवन मेरा . है नहि कुछ सुखदानी ॥
स्थापित किय गये जो जन केवल . सकल बृथा ठहरानी ॥
चलत फिरत परछाईं के सम . धूम मचावत ठानी ॥
करत ढेर नहि जानत वाको . कौन बटोरिहै आनी ॥
मैं नहि बाट किसी की जोहा . तुम पै आस लगानी ॥
मूरख निंदा मत कर मोको . अघ से करो बचानी ॥
मौन किया गय मुंह नहि खोलों . तुमही ने यह ठानी ॥

कान लगाय बिनय सुन आंसू . देखि रहो न चुपानी ॥
तेरे साथ बिदेशी याची . मैं हूं पितर समानी ॥
मेरे ओर ताक मत स्वामी . मगन होन दे दानी ॥
उस्से पहिले की मैं जाऊं . और न होऊं हानी ॥

भजन ४० । देशावरी । गीत ४० ।

जो नर वाकी देत दुहाई . सुनत प्रभू हरषाई ॥
मैं धीरज के साथ प्रभू का . जोहो मारग आई ॥
कान हमारे ओर झुकाके . मेरी सुनी दुहाई ॥
मोहि भयंकर गहिरे दलदल . कीच से लीन उठाई ॥
मेरो पांव चटान के ऊपर . स्थिर कीनो जगराई ॥
मेरे मुख में ईश्वर केरी . स्तुति डाल्यो सुखदाई॥

बहुतेरे नर देखि डरेंगे . प्रभु पै आस रखाई ॥
क्या ही धन्य सोई नर जोई . प्रभु पै आस कराई ॥
झूठ ओर जो बगद गये सो . प्रभू ओर न फिराई ॥
हे प्रभु मेरे ईश्वर तू ने . कियो काम बहुताई ॥
तुम जगत्राता तुमही दाता . मेरो होहु सहाई ॥
तेरी जोइ अनूठो चिन्ता . बिषय हमारे आई ॥
तेरे सन्मुख क्रम से बर्णन . मैं करने न सकाई ॥
चर्चा बर्णन मैं करि चाहूं . वह अगणित समुदाई ॥
बलि से और भेंट से नाहीं . होत प्रसन्न तु राई ॥
बलि की भेंट पाप की भेंटहु . हे प्रभु तू न चहाई ॥
पोथी में मम बिषय लिखा है . कहियो देख मैं आई ॥

[illegible] . जानत तू मुददाई ॥
मन के भीतर धर्म तिहारो . मैं नहि प्रभू छिपाई ॥
बर्णन कीनो हे प्रभु तेरी . मुक्ती और सचाई ॥

भजन ४१ । लाउनी । गीत ४१ ।

रंकन पै जो करत दया की . दृष्टि धन्य सो क्याही रे ॥
दुख के दिन में सकल बिपत से . प्रभू छुटैहै ताही रे ॥
रच्छा करिहै जीता रखिहै . श्री परमेश्वर वाही रे ॥
वह आशीषित भू पै रहिहै . सदा मोद सुख मांही रे ॥
उस के बैरिन के इच्छा पै . छोड़ उसे तू नाहीं रे ॥
रोगन केर बिछौने ऊपर . प्रभू संभलिहै वाही रे ॥
मैं ने कहा प्रभू तू मो पै . दाया करो सदाही रे ॥

प्राण हमारो चंगा कर तूं . मैं तव पाप किया ही रे ॥
मोहि उठाके खड़ा करो तूं . कर दाया अतुलाही रे ॥
इस्से मैं जाना तू स्वामी . हम से मुदित हुआही रे ॥
तूही ने प्रभु मोको थामा . मोर खराई माही रे ॥
सदाकाल लों अपने सन्मुख . ईश्वर मोहि रखाही रे ॥

भजन ४२ । चंचरी । गीत ४२ ।

हे प्रभु यीसु दरश तुम दीजै . करहु कृपा अब हे अविनाशी ॥
हरिणी हांफत है जिमि प्यासी . खोजत फिरत उदक तिमि आशी ॥
हांफत तुमरे हेतु यीसु प्रभु . देखहु मुक्ति बिकाशी ॥
पास तिहारे कब मैं आऊं . दरश तिहारो मैं कब पाऊं ॥

कब तक मेरो आंसु बहैगो . क्या प्रभु दाया नाहिं करैगो ॥
संत संग तेरी स्तुति करने . जैहों तव गृह भासी ॥
हे प्रभु तेरे द्वारे चलिहैं . कीरति यश सब तेरो गैहैं ॥
क्यों है मेरे जीव तूं भारी . गहो यीसु सुखराशी ॥
क्यों घबड़ाता प्राण हमारे . यीसु भरोसा जबही धारे ॥
अंत काल कल्याण तिहारो . होइहै तबहि निरासी ॥

भजन ४३ । देशावरी । गीत ४३ ।

हे प्रभु दुःखी केर दुहाई . पहुंचै कान तिहारे जाई ॥
ईश्वर मेरो न्याय करो तूं . कर विवाद में मोर सहाई ॥
निर्दय जातिगणों से स्वामी . छलो नरन से मोहि छुटाई ॥
मेरे गढ़ का ईश्वर तूं ही . कारण कौन तज्यो मोहिराई ॥

शत्रु उपद्रव से किहि कारण . शोकित होय फिरूं भटकाई ॥
अपनी ज्योति सचाई भेजो . करिहै मेरी जो अगुवाई ॥
ऐहौं मैं परमेश्वर केरी . वेदी पास निकट जगराई ॥
सर्वशक्तियुत है जो मेरो . महा मोद आनंद सुदाई ॥
हे प्रभु मेरे ईश्वर तेरी . वीणा संग करूं स्तुति गाई ॥

भजन ४४ । सिंदूरा । गीत ४४ ।

दुखियन के प्रभु केवल रक्षक आई ॥
यिसु तव नाम से हैं हम दुःखी . शत्रुन से दुख पाई ॥
ठट्ठे में सब मोहि उड़ावैं . बाउर अन्त बताई ॥
यद्यपि हो हम पर यह बीता . तबहु न तोहि भुलाई ॥
हे प्रभु तेरी राह न छोड़ी . तुम पर आस लगाई ॥

त्राण हेतु अब यीसू आओ . निज बल देहु दिखाई ॥
निज मुख हे प्रभु क्यों तु छिपावत . क्या तू हमै भुलाई ॥
हम सम मिट्टी तरफ़ झुके हैं . गिरे शोक खों जाई ॥
तुरत हमारो रक्षक होओ . उठके करो सहाई ॥
निज अशीष को याद करो तुम . मेरी सुनो दुहाई ॥
निज लोहू के द्वार से मोको . हे यीसू जगराई ॥
तुरत मुक्ति का दान तु देओ . तुम सम और न आई ॥

भजन ४५ । सिंदूरा । गीत ४५ ।

यिसु गुणसागर की प्रिय से मैं . गैहों उत्तमताई ॥
उबल रहा है मेरो मानस . बात कहूं शुभदाई ॥

मेरी जीभ चटक लेखक की . लेखनि सम हो जाई ॥
नर के बंशन में है तेरो . सुंदर रूप सुहाई ॥
गयो उडेला प्रभू अनुग्रह . तेरे होंठ मझाई ॥
आशिष दीन सदा का मोको . इसी हेतु जगराई ॥
शक्तिमान हे कटि पर बांधो . निज तलवार ठहाई ॥
अपने विभव महातम के तुम . साथ रखो लहकाई ॥
सत्य धर्म मृदुता हित आगे . चढ़िबढ़ निज प्रभुताई ॥
तुमे भयंकर कारज मारग . दहिना हाथ दिखाई ॥
सदा सनातन से है तेरो . सिंहासन मुददाई ॥
दण्ड सचाई का है तेरे . राज्य दण्ड जो आई ॥
प्रेम धर्म का तू ने राखा . दुष्टन से तु घिनाई ॥

हाथोंदात भवन से ताहि वह . उहई से हरषाई ॥
स्मरण करैहैं नाम तोर मैं . पीढ़िन मांझ सदाई ॥
इस कारण नर करिहैं तेरो . अंगीकार सदाई ॥

भजन ४६ । भैरवी । गीत ४६ ।

ईश्वर मेरो शरण गेह बल . दुख में बड़ा सहाई ॥
बदल जाय जो पृथिवी तो मैं . इस कारण न डराई ॥
गिरि सिंधु का अंतस होलै . भय नहि मोहि समाई ॥
हड़हड़ाय जो पानी उस का . और जो जाय फेनाई ॥
उस के बढ़ने से थहरावे . पर्वत के समुदाई ॥
एक सिलाह नदी है जिस की . धारें बहुत सुहाई ॥
ईश्वर नगर निवासिन के शुभ . स्थानहि हर्ष सुदाई ॥

ईश्वर वाके बीच में रहता . टलिहै नहि जगराई ॥
होत बिहाने उस को ईश्वर . करिहै प्रभू सहाई ॥
जातिगणों ने हुल्लड़ कीना . राज्य उठे थहराई ॥
उस ने अपना शब्द दिया है . जैहै भू पिघलाई ॥
सेनाओं का ईश्वर मेरे . साथ बिराजत राई ॥
है यकूब का ईश्वर मेरा . शरण गेह सुखदाई ॥

भजन ४७ । सवैया छंद । गीत ४७।

जय यीसु प्रभू परमेश्वर जै . जय देश अशेषन के जयकारी ॥
ललकारहु ईश्वर हेतु सबै . जन ताल बजा जय शब्द उचारी ॥
परमेश महान भयंकर है . सबरी पृथिवी पर है नृप भारी ॥

प्रभु जातिगणों पर भूप हुआ . निज शुद्ध सिंहासन बैठ सुखारी ॥
सब लोगन का अधिपाल जोई . अबिराहम के वह ईश्वर भारी ॥
उन के सब होकर लोग जुडे . प्रभुता कुछ जासु न जाय बिचारी॥
पृथिवी कर ढाल अहैं प्रभु के . अति सोइ महान सबै दुखहारी ॥

भजन ४८ । कजली । गीत ४८।

प्रभु करि दाया धर्म मण्डली . थाप्यो बिच हमरे ॥
है उंचाइ में सुन्दर सारी . भूमिक हर्ष भरे ॥
सैहुन पर्बत महाराज का . शोभित नगर वरे ॥
ईश्वर उस के भवन शरण का . स्थान सुजानि परे ॥
हे प्रभु मैं मंदिर बिच तेरे . दाया सोच करे ॥
हे प्रभु जैसा नाम तिहारो . तैसी स्तुति सगरे ॥

तेरा दहिना हाथ धर्म्म से . भरा बिराजत रे ॥
तेरे न्याय के कारण सैहुन . होइहै मोद तरे ॥
मेरे ईश्वर केर नगर में . शुद्ध पहाड़ खरे ॥
तापर ईश्वर महा प्रभू है . स्तुति अति योग्यवरे ॥
जैसा हम ने सुना रहा था . तस वह देखि परे ॥
प्रभु परमेश्वर सेना ईश्वर . बैठा निज नगरे ॥
ईश्वर उस को सदाकाल लों . स्थिर रखिहै सगरे ॥
है यह ईश्वर सदा हमारा . जासे दुःख टरे ॥
मृत्युकाल लों होइहै अगुआ . ईश्वर सो हमरे ॥

भजन ४९ । कंगूरा ।　　　　गीत ४९ ।

अटल रहैंगे सदन हमारे . यह चिंता मन ठाना रे ॥
सब पीढ़ी लों बास हमारो . रहिहै निश्चय माना रे ॥
निज खेतन पै नाम अपानो . हैं रखते जु नदाना रे ॥
नाहि प्रतिष्ठा में नर टिकिहै . निश्चित पशू समाना रे ॥
नाश भये यह चाल उन्हों में . मुढ़पन ऐस घुसाना रे ॥
झुंड तुल्य वे जात हंकाये . क़बर ओर अज्ञाना रे ॥
होइहै मृत्यु चरावनहारा . उन का सोचु सज्ञाना रे ॥
उन का रूप क़बर में गलिहै . बास त्यागि जहं जाना रे ॥
निज बल पै जो करत भरोसा . निज धन पै जु फुलाना रे ॥
निज भाई का सो छुटकारा . सकिहै नाहि कराना रे ॥
प्रायश्चित्त न ईश्वर को वह . देहै जग भरमाना रे ॥

जा से रहै सदा लों जीता . देखै नहीं सड़ाना रे ॥
निज पितरों की पीढ़ी मांही . होइहै तासु मिलाना रे ॥
देखिहैं वे नहि सदा समै लों . उजियालो प्रगटाना रे ॥
मृत्यु समै नहि उस को अपना . कुछुक वस्तु ले जाना रे ॥
उतरेगा सब उस के पीछे . उस का बिभव खज़ाना रे ॥
ईश्वर सोइ समाधि हाथ से . करिहै एक छुटाना रे ॥
मेरे प्राण का और न कोई . प्रभु बिन करै जु त्राना रे ॥
लेहै मोहि निकालि क़बर से . जो परमेश महाना रे ॥

भजन ५० । गौरी । गीत ५० ।

नर निज नेम यज्ञ ब्रत करके . पाप सकै न मिटाय ॥

ताहि विषै हम नाहि करैंगे . तव धिक्कार दुराय ॥
बैल भेड़ बकरा नहि तेरे . घर से मोहि चहाय ॥
बन के पशुगण पक्षी गिरिके . सब वह मोरहि आय ॥
बिविध पहाड़ी बनपशु पक्षो . मेरे पास रहाय ॥
यदि मैं भूखा होउं तभूं नहि . कहिहैं तुम से जाय ॥
सब जग अरु उस को भरपूरी . सब कुछ मोरहि आय ॥
क्या मैं भेड़ रुधिर को पीहैं . वृष के आमिष खाय ॥
धन्यबाद की भेंट चढ़ाओ . ईश्वर हेतु सदाय ॥
अति महान के हेतु मनौती . अपनी पूर कराय ॥
बिपति समै में मोहि पुकारो . देहैं तोहि छुटाय ॥
मेरी महिमा प्रगट करेगा . तन मन तू हरषाय ॥

भजन ५१ । देशावरी ।   गीत ५१ ।

हे प्रभु निज दाया सम मो पै . करहु कृपा जग के सुखदाई ॥
निज दाया अधिकाइ समाना . मम अपराध तु देहु मिटाई ॥
मुहि धोओ अघ से भलि भांती . शुद्ध करो सब पाप छुटाई ॥
निज अपराधन को मैं जानूं . सन्मुख पाप सदा मम आई ॥
केवल तव अपराध कियो मैं . तेरी दृष्टिम कौन बुराई ॥
सत्य रहो निज बातन में तूं . निज बिचार में शुद्ध बनाई ॥
देख पाप से मैं हूं उपजा . अघयुत मातहु गर्भ समाई ॥
मेरे अघ से निज मुख फेरो . मम अधर्म सब देहु मिटाई ॥
मन पवित्र मम हित उपजाओ . स्थिर नव अन्तर आत्म बनाई ॥
हम से निज शुद्धात्म न लेओ . मोहि निज सन्मुख दे न दुराई ॥

मेरी जीभ तिहारी स्वामी . धरम गीत गहै हरषाई ॥

भजन ५२। भैरवी। गीत ५२।

अपने को क्यों नष्ट करत हो . हे दुष्टो अविचारे ॥
हे बलवान बुराई पै तू . फूलत क्यों बहु वारे ॥
सर्बशक्तियुत केर कृपा जो . रहती निशि दिन सारे ॥
तीक्षण छूरा सम जो छल से . निज कारज करता रे ॥
तेरी जीभ बुराई अगणित . सदा निकालत ख्वारे ॥
सदा भलाई से तू कीनो . अधिक बुराई प्यारे ॥
अधिक झूठ को प्यार कियो तू . बोलन सत्य बिसारे ॥
छली जीभ प्रिय कीन तू बातैं . जोइ बिनाशन कारे ॥
सर्बशक्तियुत ताको ढैहै . सदा काल हित न्यारे ॥

झाड़ि डालिहै तंबू से वह . देहै ताहि निसारे ॥
डलिहै ताहि उखाड़ि भूमि से . जीवन की निरवारे ॥
धर्मी देखिहैं डरिहैं उन पर . हंसिहै ठट्ठा मारे ॥
प्रभु को शरण न ठानि छली जो . ताहि लखो दुरचारे ॥
निज धन की अधिकाई पै जो . रहत भरोस अपारे ॥
प्रबल रहत निज दुर्जनता में . ऐसो मूढ़ गवांरे ॥

भजन ५३ । लाउनी वा भैरवी । गीत ५३ ।

अपने जन्म केर जो दाता . तासे सब भटकाने रे ॥
ईश्वर है नहि कोई अपने . मन में मूरुख जाने रे ॥
घिनित बुराई सबरे कीनो . कोइ भलाइ न ठाने रे ॥

नहीं सुकर्म्मी उन न कोई . प्रभु को देख पड़ाने रे ॥
रोटी सम मम लोगन खाते . क्या न कुकर्मी जाने रे ॥
प्रभु का नाम न लेते अपने . चलते हैं मन माने रे ॥
लज्जित होइहैं सबरे जोई . ईश्वर छोड़ भुलाने रे ॥
अपने लोगन पास प्रभू जो . ऐहै पाप छुटाने रे ॥
लहि उद्धार भक्त सब होइहैं . मुदित महा हरषाने रे ॥

भजन ५४ । होली । गीत ५४ ।

तू प्रभु केवल मोर सहारा ।
हे प्रभु अपने नाम से मोको . लेहु बचा शुभकारा ॥
निज बल से कर न्याय तु मेरो . बिनय सुनो मम सारा ॥
कान धरि बात हमारा ॥

उठत बिरोधी सकल बिदेशी . मोहि सतावनहारा ॥
भये प्राण के गांहक मेरे . प्रभु को जो दुरचारा ॥
रखत निज सन्मुख न्यारा ॥
ईश्वर सोइ सहायक मेरो . प्राण संभालनहारा ॥
शत्रुन पै वह फेरु बुराई . अपनी सचाई प्रचारा ॥
नाश कर ताहि खुआरा ॥
तेरे नाम की स्तुति मैं करिहौं . बलि चढ़ाय सुखकारा ॥
सकल बिपति से मोहि छुटायो . तुमहि भलो दुखहारा ॥
सबहि बिधि हो हितकारा ॥

भजन ५५ । कल्याण । गीत ५५ ।

रिपु रव कारण दुष्ट दुष्टता . हेतु उठौं चिल्लाई ॥
करन बिरोध क्रोध से मेरे . उपर हानि पहुंचाई ॥
ऊपर पड़त मृत्यु भय मेरे . भीतर मन ममसाई ॥
डर थहराहट कंप मोहि पै . चह आवन प्रवलाई ॥
मैं अस कहा हाय जो पंखा . होत कपोत कि नाई ॥
हम उड़ि जाते चैन पावते . करते दूर फिराई ॥
जंगल में हम सुख से रहते . मन मानत घुमराई ॥
प्रबल झकोरा आंधी से हम . लेते निजहि बचाई ॥
मेरा शत्रु कियो नहि निंदा . नहि तो लेंहु सहाई ॥
मम बुराइ जो डाही कर तो . लेते निजहि छिपाई ॥
मित्र चिन्हार बरोबर मेरे . तू अब कौन बुराई ॥
टेरिहैं मैं अब श्री जगपति को . लेहै मोहि बचाई ॥

सांझ सबेरे दुपहर को मैं . सोचि उठूं चिल्लाई ॥
मेरो शब्द सुनो प्रभु स्वामी . सब के जो सुखदाई ॥
रही लड़ाई मोपर जोई . तामें कुशल बढ़ाई ॥
मेरे प्राण को मोक्ष दियो है . सब रिपु बृंद मिटाई ॥
अपना बोझ डाल प्रभु ऊपर . करिहै त्राण सदाई ॥
धर्म्मी को नहि टलने देहै . सदाकाल जगराई ॥

भजन ५६ । चंचरी । गीत ५६ ।

दुखियन के प्रभु यीसु सहायक . मोपै कर दयताई ॥
मरनहार नर मुह फैलावत . मोपै सब रिपु डाह बढ़ावत ॥
बहुत लीलनेहार दबावत . मोको है सुखदाई ॥
जा दिन तम से मैं प्रभु डरिहौं . तुम पर आस भरोसा रखिहौं ॥

गिन्यो तु मेरो भ्रमण सदोषी . हे प्रभु दीन सहाई ॥
मम रख आंसु स्वबर्तन मांही . क्या वह बही में तेरी नाही ॥
ताहि समै सब रिपु हट जांही . जब टेरिहैं घबराई ॥
मैं यह जानूं मेरी ओरा . है ईश्वर नहि संशय थोरा ॥
मो पर अहैं मनौती तोरा . स्तुति करिहैं हरषाई ॥
मौतहु से जो प्राण रखैया . क्या पद ठोकर से न बचैया ॥
जातें जीवन के उंजलैया . चलूं प्रभू समुहाई ॥

भजन ५७ । बसंत । गीत ५७ ।

है रे भरोस घनेरी . प्रभू कि दया पर मेरी ॥
मो पर करहु दया प्रभु मेरे . प्राण शरण लखि तेरी ॥
तेरे पंख की छाया नीचे . लेहैं शरण अबेरी ॥
कष्ट जब लों न मिटेरी ॥

टेरिहैं ताहि महा प्रभु को मैं . सर्व सुशक्ति लसेरी ॥
निज बचननको विषय हमारे . पूर किया जु कहेरी ॥
नेक नहि किय झकझेरी ॥
भेजि स्वर्ग से मोहि बचैहै . ता घर जोइ किये री ॥
निंदा मेरे लीलनहारे . सत्य दया निज केरी ॥
भेजि प्रभु देहै अबेरी ॥
सिंह बीच है प्राण लेटिहैं . नर सुत बीच पड़े री ॥
दंत भाल अरु तीर समाना . जीभ तेज़ शमशेरी ॥
कौन सकि हाल कहेरी ॥
होहु महान स्वर्ग पै सारी . भूमि बिभव हो तेरी ॥
मेरे पद हित जाल रच्यो वह . प्राण दवाय दियेरी ॥
गिरन हित गर्त रचे री ॥

प्रात जगवैहीं न देरी ॥

जातिगणों के बीच बजाके . स्तुति करिहैं प्रभु तेरी ॥
करिहैं धन्य सभीजन मांही . तन मन से हरषेरी ॥

जानि निज मोद सुखेरी ॥

दया तिहारी स्वर्ग लोक लों . है महान वह ढेरी ॥
मेघन लों प्रभु तोर सचाई . जो नहि कहत वनेरी ॥

बर्णहुं कवन बिधिसे री ॥

भजन ५८ । भैरव । गीत ५८ ।

हैं प्रभु धर्म्मी के जग मांही . बैरी दुष्ट घनेरे ॥
हे नर पुछो क्या तुम सचमुच . गूंगे रहत अनेरे ॥
है अवश्य जो धरम से बोलो . सोचु सचाई से रे ॥

करते हो तुम अपने मन में . दुष्टाई बहुतेरे ॥
तौलत हो तुम पृथिवी पै निज . हाथों का अंधेरे ॥
भये पराये झूंठे भटके . दुर्जन पेटहि से रे ॥
सर्प ज़हर सम है बिष उन का . दुष्ट कुबुद्धि भरे रे ॥
बहुत मंत्र पढ़ि फूंके कितनो . जो नहि नाग सुने रे ॥
ताहि नाग की नाईं दुर्जन . मुदिहैं कान अबेरे ॥
हे प्रभु उन के मुख में तोड़ो . दांत सभी उन केरे ॥
हे परमेश्वर युवा सिंह की . डाढ़ैं कुचल अबेरे ॥
मनुज कहैगा धर्म्मी के हित . है प्रतिफल निरवेरे ॥
न्याय केर कर्ता पृथिवी पै . है ईश्वर सब के रे ॥

भजन ५९ । गीत ५९ ।

मोहि कुकर्म्मिन से तु बचाश्रो . दुष्टन से रख न्यारे ॥
लगे घात में प्राण के मेरे . देख प्रभू दुखहारे ॥
सब वलवंत एकट्ठे होके . मोर बिरोध बिचारे ॥
है अपराध पाप नहि मेरो . नाहक करत दुखारे ॥
बिना दोष के दौड़त सबरे . अपने को सुसंवारे ॥
हम से मिलने के हित जागो . देखो हे प्रभु प्यारे ॥
सांझ समै वे कूकर नाईं . भूंकत फिरें खुआरे ॥
निज मुख से वे खड्ग निकालत . देखो महा करारे ॥
उन के ओठन पर है सोई . कोई सुनत नहि द्वारे ॥
हे परमेश्वर उन पर हंसिहौ . तू लखि कर्म गंवारे ॥
ठट्ठे में सब जातिगणों को . तुमहि उड़ैहौ प्यारे ॥
तेरे हित मैं उस के बल की . रच्छा करिहैं ठारे ॥

ईश्वर मेरो शरणस्थान है . और न कोइ सहारे ॥
तेरे बल की छंद गाइहैं . करि मन मोद अटारे ॥
गान करूंगा दया प्रभू मैं . होत बिहान तिहारे ॥
भयो बिपति में शरण तु मेरो . स्थान ऊंच हितकारे ॥
हे मेरे बल तेरे हित मैं . गैहैं भजन प्रचारे ॥
ईश्वर मेरो शरण गेह है . दयायुक्त प्रभु प्यारे ॥

भजन ६० । सुहब । गीत ६० ।

हम जिति हैं प्रभु संग करि रारी ॥
हे प्रभु त्याग दीन तू मोको . फूट दियो तू डारी ॥
क्रोधित भयो हमैं फिर करिहो . यथा योग्य अनुसारी ॥
पृथिवी को प्रभु तुमहि कंपायो . चीरो ताहि बिगारी ॥

मादरा तुमहि पिलायो हे प्रभु . जो लथरावनहारी ॥
निज डरवैयन को तू दीनो . ध्वजा एक हितकारी ॥
जातें तोर सचाई कारण . खड़ा होय सुखकारी ॥
प्रेमी तोर छुटाये जायें . जाते हे जगतारी ॥
निज दहिने कर से तु बचाओ . बिन्ती सुनो हमारी ॥
हे प्रभु त्याग दियो जो मोको . सो तुम से क्या न्यारी ॥
ईश्वर मेरे सेना के संग . चलिहै क्यों न अधारी ॥
बिपति समै सुखदायक मेरो . कर सहाय रखवारी ॥
मनुज ओर से बृथा सकल है . जो बचाव सुबिचारी ॥
पावैंगे बल ईश्वर से हम . होइहैं जासु सुखारी ॥
मेरे जोह सतावनहारे . देहै तिनहि लथारी ॥
तेरे बल की छंद गाइहैं . करि मन मोद अटारी ॥

गान करूंगा दया प्रभू मैं . होत बिहान तिहारी ॥
भयो विपति मैं शरण तु मेरा . स्थान ऊंच हितकारी ॥
हे मेरे बल तेरे हित मैं . गैहैां भवन प्रचारी ॥
ईश्वर मेरा शरण गेह है . दयायुक्त प्रभु ह्मारी ॥

भजन ६१ । कंगूरा । गीत ६१ ।

बिन्ती पै प्रभु सुरत लगाओ . चिल्लाना सुन मेरा रे ॥
मैं मन शोकित भूमि खूंट से . ओर पुकारिहैां तेरा रे ॥
हम से ऊंच चटान के ऊपर . होइहैा अगुआ मेरा रे ॥
स्थान शरण का भयो तु मेरा . रिपु सन्मुखगढ़ भेरा रे ॥
सदाकाल लों रहा करूंगा . मैं प्रभु तेरे डेरा रे ॥
तेरे पंख की छाया नीचे . लेहैां शरण अवेरा रे ॥

सिंहासन पै प्रभु के सन्मुख . रहिहै सदा लसेरा रे ॥
दया सचाई मान रखो सब . करिहैं तासु रखेरा रे ॥
सदाकाल लों तेरे नाम की . करिहैं स्तुती घनेरा रे ॥
करिहैं पूरा प्रतिदिन जाते . अपन मनौती ढेरा रे ॥
नृप की बय पर वयस बढ़ैहै . ता पीढ़ी बहुतेरा रे ॥

भजन ६२ । कंगूरा । गीत ६२।

रे मन ईश्वर जो गुणसागर . ताको कर गुण गाना रे ॥
केवल ईश्वर ओर फिरन से . चैन लह्यो मम प्राणा रे ॥
मेरी मुक्ति उसी से केवल . मेरो सोइ चटाना रे ॥
शरण सुस्थान मुक्ति है मेरो . होइहै मोहि न हिलाना रे ॥
फिरके ईश्वर ओर रहो चुप . केवल मेरो प्राणा रे ॥

ताही से है आसा मेरी . सोई मुक्ति चटाना रे ॥
हलचल होइहै मेरो नाही . सोई शरण सुस्थाना रे ॥
शरण सुस्थान चटान सुबल की . प्रभु में बिभव लसाना रे ॥
हे सब जातिगणो प्रभु ऊपर . राखु भरोस अपाना रे ॥
अन्तःकरण उंड़ेलो आगे . ईश्वर के जो त्राणा रे ॥
नीच लोग हैं बृथा जु केवल . सच्च नाहि नेक लखाना रे ॥
झूठे हैं ऊंचे पदवाले . होइहैं तुला उठाना रे ॥
सब के सब हैं बृथा सु हलके . जासु न आदरमाना रे ॥
कर न भरोस अंधेर के ऊपर . व्यर्थ अनय न गहाना रे ॥
बढ़े यदपि धन कितनो वामें . लाउ न मन तु अपाना रे ॥
एकहि बात कह्यो प्रभु मैं सुनि . दोइ बचन परमाना रे ॥
ईश्वर केर पराक्रम है नाहि . और कोई बलवाना रे ॥

भजन ६३ । चंचरी । गीत ६३ ।

मगन मोर मन ध्यान करन में . प्रभु के जो अविनाशी ॥
सर्बशक्तियुत तू प्रभु मेरो . ढुंढ़िहैं मैं तोहि होत सवेरो ॥
मम है तृषित प्राण हित तेरो . हे दिव धाम निवासी ॥
सूखी पृथिवी में तनु मेरो . जल बिन थकि अभिलाषी तेरो ॥
बिभव पराक्रम तुमरो देखूं . धर्म धाम लखि जासो ॥
जीवन से भल दया तिहारी . तव करिहै स्तुति होंठ हमारी ॥
जीवन भर तोहि धन्य कहूंगा . हे प्रभु धर्म प्रकाशी ॥
निज कर ले तव नाम उठैहैं . हर्षित ओठन से स्तुति गैहैं ॥
मज्जा चिकना से मम प्राणा : होइहै तृप्त सुखासी ॥
आसन पै तोहि स्मरण करतहैं : निशि पहरन मे ध्यान धरतहैं ॥

मेरे हेतु सहाय तुही हो . हे प्रभु मुक्ति विकासी ॥
छाया तरे पंख के तेरे . करिहों मोद अनंद घनेरे ॥
पीछे है लपटाना मेरे . प्राण प्रभू सुखकासी ॥
तेरो दहिना हाथ संभारत . मोको और न कोइ सवांरत ॥
तुम अघ से सब जगत बचावत . टेक तुमहि हुलासी ॥

भजन ६४ । भैरवी ।   गीत ६४।

बैरी जभी सतावैं मेरा . ईश्वर तभी सहाई ॥
हे प्रभु मेरा शब्द सुनो तू . मेरी मांझ दुहाई ॥
बैरी भय से प्राण हमारो . लेहो तुमहि बचाई ॥
दुष्टन केरी छिपी जु संमति . लेहो तासु छिपाई ॥
हुल्लड़ जोइ अधर्म्मिन केरी . देहो तासु दुराई ॥

गुप्त जगह में सिद्ध मनुज को . मारन चित्त समाई ॥
मारहिंगे वे उसे अचानक . उस के नहि डर आई ॥
स्थिर करते हैं बुरी बात को . अपने हेतु सदाई ॥
छिपके फंदे मारन केरी . बातें करत ठहाई ॥
हम को कौन लखेगा ऐसा . कहत सदा दृढ़ताई ॥
बुरे कर्म की खोज करत हैं . कहत लैस हम आई ॥
सब का अंतर अरु मन गहिरा . अच्छी युक्ति लखाई ॥
मारिहै ईश्वर तिन्हैं अचानक . अपनो बाण चढ़ाई ॥
घाव उन्हीं के होइहैं देखो . जैहै सोइ गिराई ॥
जीभ उन्हीं पर पड़िहै सब रे . भगिहै दृष्टि कराई ॥
धर्म्मी प्रभु से मोदित होइहैं . तापर आस रखाई ॥
करिहै उस्से दर्प खरे जो . मनबाले समुदाई ॥

हे प्रभु ईश्वर भूमि फलत है . तुमरी दया अधारे ॥
हे जग स्वामी कौन जात है . स्तुति समुदाय तिहारे ॥
तेरे हेत मनौती पूरी . जैहैं कौन सकारे ॥
हे बिन्ती के श्रोता सब तनु . ऐहैं पास तिहारे ॥
अधरम की जो बातैं हम से . हैं सो प्रबल महा रे ॥
देहौ तू बलिदान तिसू का . जो अपराध हमारे ॥
चुनिके जाहि समीपी करिहौ . सोई धन्य बड़ा रे ॥
घर आंगन में तेरे रहिके . होइहौं तृप्त सुखारे ॥
मंदिर शुद्ध भलाई से हम . होइहैं तृप्त तिहारे ॥
पृथिवी पै तू दृष्टि किया है . सींच्यो ताहि संवारे ॥
अति फलदायक करिहौ ताको . तुमही जगत अधारे ॥

तासु कियारिन को तुम सींचो . ढेलन कर समथा रे ॥
बादल से तुम कोमल करिहो . कोंपल आशिष धारे ॥
निज भलाइ से बरस के ऊपर . तूंही मुकुट रखारे ॥
तेरे पंथन से चिकनाई . टपकत तहां सदा रे ॥
टपकत जंगल केर चराई . टीले हर्ष गुथा रे ॥
झुंडों का पहिरावा पहिने . यहां चराई सारे ॥
सकल तराई ढांप जाइगी . अन्नों के अति भारे ॥
आनंद से ललकारा करिहैं . गैहैं होय सुखारे ॥

भजन ६६ । आसावरी । गीत ६६ ।

अरे मन तू भज ईश्वर को जो : सर्बसमर्थि सहाई ॥
मेरे प्रभु का हे सब लोगो . धन्यवाद करु आई ॥

उस की स्तुति का शब्द सुनाओ . रखत जु प्राण जिवाई ॥
अटल किया जो पांव हमारो . परखा मोहि जगराई ॥
तू ने मोको ताया ऐसा . रजत ताय जिमि जाई ॥
मरनहार नर मेरे शिर पै . हे प्रभु तुमहि चढ़ाई ॥
पानी आग मांझ हम आये . तू अब दुःख मिटाई ॥
आनंद की भरपूरी में अब . मोको तू पहुंचाई ॥
मैं बलिदान साथ घर तेरे . ऐहैं हे जगराई ॥
पूरी करिहैं तुमें मनौती . अपनी हे सुखदाई ॥
बिपति समै मुख बोला मेरो . जिनको ओंठ हिलाई ॥
हे प्रभु के सब डरनेहारो . आय सुनो चित लाई ॥
प्राण हेतु मम जो प्रभु कीनो . वर्णों ताहि ठहाई ॥
निज मुख से मैं ताहि पुकारा . जीभ तर रहो बड़ाई ॥

हा प्रभु धन्य जु मोर न फेरी . बिन्ती निजदयताई ॥

भजन ६७ । भैरव सुहव । गीत ६७।

सकल जगत में गाई जैहै . ईश्वर की स्तुति भारी ॥
ईश्वर हम पर दया करे अरु . आशिष देय सवांरी ॥
अपना मुख हम पर चमकावै . जासे होउं सुखारी ॥
पृथिवी में प्रभु तुमरा मारग . जासे होय प्रचारी ॥
सारे जातिगणों में स्वामी . विकशै मुक्ति तिहारी ॥
सकल जातिगण तेरी करिहैं . हे प्रभु स्तुती पुकारी ॥
मोदित होइहैं सकल जातिगण. करके जय जयकारी ॥
सुधरम से प्रभु सकल जनों का . करिहा तुमहि बिचारी ॥
पृथिवी पर सब जातिगणों का . अगुआ होइहै भारी ॥

हे प्रभु सकल जातिगण करिहै . स्तुति समुदाय तिहारी ॥
दिई भूमि निज बढ़ती मोहिं प्रभु. आशिष देहै सारी ॥
पृथिवी के सब जोइ सिवाने . प्रभु से डरिहैं न्यारी ॥

भजन ६८ । भैरव । गीत ६८।

सकल जगत का है महाराजा . परमेश्वर सुखदाई ॥
ईश्वर उठिहै तो सब बैरी . छिन्न भिन्न हो जाई ॥
उस के आगे से भगि जैहैं . बैरी सबै डराई ॥
धुआं मिटत जस तैसा उन को . देहो प्रभू मिटाई ॥
प्रभु सन्मुख तस दुष्ट नशैहैं .मोंम अगिन जस पाई॥
हर्ष भरे अति मोदित होइहैं . धर्म्मी प्रभु समुहाई ॥
गान करो परमेश्वर केरा . नाम केर स्तुति गाई ॥

हे प्रभु तू निज लोगन आगे . निकलि चला सुखदाई ॥
जब तू चरण धरा पृथिवी में . तब पृथिवी थहराई ॥
स्वर्गलोक भी ईश्वर आगे . टपका कंप समाई ॥
इसरायल प्रभु के यह सन्मुख . सीना पै जु सुहाई ॥
सेंत दान का बरसत बादल . हे ईश्वर जगराई ॥
निज निर्बल अधिकार जोइ तिहि . तूहि करत स्थिरताई ॥
तेरा झुंड बसा है उस में . हे ईश्वर मुददाई ॥
रंकन के हित सिद्ध करोगे . गहि अपनी दयताई ॥
उस की बड़ी प्रचारक सेना . प्रभु सन्देश सुनाई ॥
बीस सहस्र सहस्रों ऊपर . प्रभु रथ सहस सुहाई ॥
हे प्रभु उन में अरु जो सीना . धर्म धाम महं आई ॥
बंधुअन को तू बंधुआ कीना : ऊंचे चढ़ा तु राई ॥

आदम के संतानों मे अह . दुष्टन में भी जाई ॥
लीनी भेंट प्रभू तू उन से . जासु बसें यह आई ॥
धन्य प्रभू परमेश्वर होवै . प्रतिदिन सदा सहाई ॥
बोझ रखेगा जो नर मोपै . प्रभु देहै तु छुटाई ॥
सर्वशक्तियुत मुक्ति हेतु मम . सर्व समर्थी सांई ॥
है यह काम प्रभू ही केरा . मृत्यु से जोइ छुटाई ॥

भजन ६९ । देशावरी । गीत ६९।

डूबनहारे की है दुहाई . तुम को हे सुखदानी ॥
हे प्रभु मोहि बचाओ मेरे . पहुंचि प्राण तक पानी ॥
धंसि गयो मैं गहिराव कीच में . नाहि ठहराव दिखानी ॥
गहिरे पानी में मैं आयो . बाढ़ दबायो आनी ॥

बैर रखत जु अकारण हम से . सो कच से अधिकानी ॥
धोखा देनेहार विनाशक . मम रिपु बल की खानी ॥
मम मूरखता को तू प्रभु जानत . तुम से अघ न छिपानी ॥
हे प्रभु सेनापति जो तेरी . जोहत बाट हहानी ॥
होंय न लज्जित मेरे कारण . हे इसरायल त्रानी ॥
तेरे खोजी मेरे कारण . होंय नहीं अपमानी ॥
सह्यो तिहारे हेतु उलहना . मम मुख लाज ढपानी ॥
भाइन में मैं भयो विदेशी . मातु सुतन विलगानी ॥
तव अपवादी को अपवादा . मोपै आय पड़ानी ॥
तुमही से है मेरी बिन्ती . हे जगपति मुददानी ॥
तोर दया बहुताई से मैं . ग्राह्य समै निज जानी ॥
अपनी मुक्ति सचाई में प्रभु . मेरी सुन हुलसानी ॥

हमैं कीच से तुमहि निकालो . होय न मोर धंसानी ॥
हे प्रभु जल गहिराव शत्रु से . तू हमरो कर त्राणी ॥
जल की बाढ़ न मोहि दबावै . गहिरे हो न डुबानी ॥
निज मुख मोपै बंद करे नहि . कूप यीसु गुणखानी ॥
ईश्वर सुनो हमारी तेरी . दया भली सुख धानी ॥
निज दाया बहुताई के सम . रहु मम ओर फिरानी ॥
हे परमेश्वर जगपति त्राता . सकल पदारथ दानी ॥

भजन ७० । तोटक छंद । गीत ७० ।

परमेश्वर मोर सहायक है . रखवारि करो कर नेक न देरी ॥
प्रभु मोर बचाव सहाय लिये . परमेश्वर बेग करो नहि देरी ॥
मम प्राणक गांहक है नर जो . सब लज्जित छोभित भावि अवेरी ॥

तुमरे सब खोजि जुई नर हैं . हुइहैं अति मोदित हर्षित ढेरी ॥
कहिहैं प्रभु होय महान सदा . नर प्रेमि जुई प्रभु मुक्तिक तेरी ॥
हम हैं दुखिया अरु रंक घना . हमरे हित स्वामि करो नहि देरी ॥
तुमही प्रभु मोर सहायक हो . तुमही जग मुक्ति सुदेत निवेरी ॥
परमेश्वर स्वामि सहायक है . कर देर नहीं अब आव अवेरी ॥

भजन ७१ । बसंत । गीत ७१ ।

हे प्रभु रखत भरोसा तुमै पर मैं चित लाई ।
कबहुं तु लज्जित होन न दे मोहि . मोहि छुटैहो आई ॥
अपने धर्म से मेरो छुटकारा . करिहो लेहु बचाई ॥
कान मम ओर लगाई ।
मेरो बास की तुमहि चटाना . मैं एहैं नित राई ॥

मोहि बचावन को तुम दीनो . आज्ञा है सुखदाई ॥
चटान गढ़ मोर तु आई ।
हे प्रभु मेरी आस तुहो हो . स्थान शरण तरुणाई ॥
बहुतों के हित भयो अचंभा . तुमही मोर सहाई ॥
शरण दृढ़ और न आई ।
विभव विनय से तव मुख मेरो . रहिहै भरा सदाई ॥
वृद्ध समय मोहि फेंकि न देओ . जब बल मोर घटाई ॥
प्रभु तव दे न दुराई ।
तरुण समै में मोहि सिखायो . हे मंगल मुददाई ॥
तुमरे अद्भुत कर्मन केरा . बर्णन करत सुहाई ॥
सबै गुण ग्राम ठहाई ।
वृद्ध समै अरु बालकपन में . मोको दे न बिहाई ॥

तेरा धर्म बड़ा है ऊंचा . ईश्वर हे मुददाई ॥
बड़े बड़े प्रभु काम तु कीने . तुम सम कौन तुलाई ॥
तुमहि जग स्वामि सहाई ।

भजन ७२ । कल्याण । गीत ७२।

निज सुत यिसु को जग महराजा . करिहो हे नर त्राणी ॥
हे परमेश्वर नृप को देओ . निज बिचार अनुमानी ॥
अपना धर्म तु देओ हे प्रभु . राज पुत्र को मानी ॥
लोगन का वह तुमरे करिहै . न्याय धरम चित ठानी ॥
दुखियन का वह न्याय करेगा . साथ बिचार सुजानी ॥
पीढ़िन तक वे डरिहैं तुम से . रवि विधु ध्रुवा प्रमाणी ॥
कटी घास पे हो जु गिलाई . तासम ऐहै दानी ॥

उतरेगा वह झड़ी कि नाईं . जासे भूमि सिंचानी ॥
धर्मी उगिहै उस के दिन में . जौलों चन्द्र निसानी ॥
होइहै कुशल केर अधिकाई . सुख मुद मंगल खानी ॥
सिंधू से वह सिंधु अंत लों . प्रभुता करिहै वाणी ॥
सरिता से वह भूमि अंत लों . करिहै राज लसानी ॥
ता आगे झुकिहै बन बासी . रिपु चटिहैं रजधानी ॥
तरसिस अरु टापुन के राजा . भेजिहैं भेंट सुमानी ॥
सबा सिबा के राजा लेहैं . भेंट सहित बलदानी ॥
सेवा करिहैं सकल जातिगण . सब नृप नमति सुठानी ॥
देत दुहाई रंक दुखी जो . ताहि बचैहै दानी ॥
करके दाया प्राण बचैहै . अशरण रंक जु जानी ॥
उन का वह अंधेर दुःख से . करिहै प्राण छुटानी ॥

इसराएल अरु खरे चित्त के . हेतु भला प्रभु जाना ॥
फिसल जाय टल जाय हमारो . पांव रहों नियराना ॥
डाह करत गर्बिन से कहता . देखूं दुष्ट कल्याना ॥
मृत्यु समय उन के हित कोई . बंधन नहीं लखाना ॥
हैं नहि दुख में नर सुत नाई . उन की शक्ति पुढ़ाना ॥
नर सुत संग मार नहि खाते . इसी हेतु अभिमाना ॥
हंसुली भयो ढांप लिय उस को . बस्त्र अंधेर क ताना ॥
देखो यहीं अधर्म्मी सबरे . सदा भये सुखमाना ॥
अपनी संपति सदा बढ़ाई . कहं तक कहों बखाना ॥
केवल बृथा शुद्ध मैं कीनो . अपना मन यह जाना ॥
निर्मलता में अपने कर को . धोयो मैं अज्ञाना ॥
खात रहा मैं मार सबै दिन . ताड़न सदा मिलाना ॥

फिसलाऊ जो स्थान तिसी में . रखिहौ उन को जाना ॥
तू अब डाल दियो है उन को . नाश मझार सुठाना ॥
एकहि पल में उजड़ गये सब . मिट गय नाम निसाना ॥
जागनहार क स्वप्न कि नाईं . जगिहौ जब हे राना ॥
जनिहौ तुच्छ स्वरूप तु उन के . हे प्रभु दया निधाना ॥
मेरा कौन स्वर्ग के ऊपर . तेरे संग लगाना ॥
चाहा नहीं किसी को मैं ने . हे प्रभु जगत प्रधाना ॥
हे प्रभु घटिगो तन मन मेरो . ईश्वर मोर तु त्राणा ॥
मेरो भाग तुम्ही हौ स्वामी . मन को तुमहि चटाना ॥

भजन ७४ । भैरवी । गीत ७४ ।

हे प्रभु कब लों निंदा करिहै . बैरी जोइ तुमारे ॥

नृप प्राचीन मोर प्रभु देता . भू में जो छुटकारे ॥
जल पै अजगर सिरको कुचल्यो . निज बल सिंधु जु फारे ॥
बहती नदियां तुमहि सुखायो . सोते चीरि तु धारे ॥
रात दिना हैं तेरे तू ने . रचा भानु उंजियारे ॥
शीत अशीत रचा तुम थाप्यो . भूमि सिवाने सारे ॥
स्मरण करो कि बैरी प्रभु की . निंदा किई खुआरे ॥
हुआ सताया लज्जित होके . पलटि न जाय नियारे ॥
मूढ़ जातिगण तेरे नाम की . अपनिंदा करि सारे ॥
रंक दुखी सब करें नाम की . हे प्रभु स्तुती तिहारे ॥
हे प्रभु ईश्वर उठो करो तू . निज बिवाद निरवारे ॥
सब दिन मूरुख करत जु निंदा . स्मरण ताहि रखु प्यारे ॥
नित्य उठत जो शत्रु कोलाहल . भूल न ताहि तु जा रे ॥

भजन ७५ । आसावरी । गीत ७५ ।

स्तुति करते हम हैं प्रभु तेरी . स्तुति करते हम हैं प्रभु तेरी ॥
होना प्रगट नाम का तेरे . या जग में है निकट अवेरी ॥
न्याई प्रभु करिहै इक नीचा . दूजहि करिहै ऊंच निवेरी ॥
ईश्वर के कर मांझ कटोरा . क्रोध सुरा फेनात घनेरी ॥
भरा मिलावट से है सोई . तासु उंडेलत प्रभू घुमेरी ॥
सारे दुष्ट निचोड़ि पियेंगे . तरछट केवल तासु लहेरी ॥
ईश्वर की स्तुति गान करूंगा . बर्णन सदा करूं हरषे री ॥

भजन ७६ । आसावरी । गीत ७६ ।

निज जन के प्रभु त्राण करन में . अपनी महिमा प्रगट करत रे ॥
पड़ि गये नींद मांझ रथ घोड़े . नाथ तिहारी दपट सुनत रे ॥

दिव से तुमहि बिचार सुनायो . पृथिवी डरिके थंगित रहत रे ॥
उठा न्याय हित जवही ईश्वर . सकल सुजन के श्रवन सुहितरे ॥
स्तुति करिहै नर क्रोध तिहारी . क्रोध शेष तू कटि मे बंधत रे ॥
हे सबरे जन पास प्रभू के . मान मनौती करहु पुरित रे ॥
ताहि भयंकर ईश्वर आगे . लावैं भेंट सकल हरषित रे ॥

भजन ७७ । सारंग । गीत ७७।

ईश्वर ओर उठैहों मैं निज . शब्द सुनेगा कान लगाय ॥
निज बिपत्ति के दिन में प्रभु को . मैं ढूंढ़ा दुख पाय ॥
फैला रहत रात को मेरो . कर न गयो निवराय ॥
प्राण हमारो शांति लाभ से . नाहि कियो भटकाय ॥
स्मरण करत हों ईश्वर को मैं . हाहाकार मचाय ॥

५०

मैं हूं चिंता करत हमारो . मूर्छित प्राण जु आय ॥
अगले दिन अरु बर्षों पै मैं . सोच कियो चित लाय ॥
स्मरण करूंगा मैं जो अपने . निशि में गान कराय ॥
होइहै कबहुं प्रसन्न नहीं क्या . त्यागिहै प्रभू सदाय ॥
सदाकाल हित क्या प्रभु केरी . जात रही दयताय ॥
सर्व शक्तियुत भूलि गयो क्या . करना दया भलाय ॥
क्रोध मांझ क्या बंद कियो है . निज दाया जगराय ॥
तेरे सारे कामन को मैं . करिहैां ध्यान सदाय ॥
सोच करूंगा कीरति पै मैं . तेरी हे सुखदाय ॥
अति पवित्र है तेरो मारग . हे ईश्वर जगराय ॥
ईश्वर के सम और महेश्वर . कौन बड़ा जग आय ॥
सर्व शक्तियुत हो प्रभु तुमही . अद्भुत कर्म कराय ॥

गरजि उंडेलत पानी बादल . तव शर सरग उड़ाय ॥
तेरे गर्जन का रव स्वामी . बौंड़र मांझ हुआय ॥
करि उंजियाला पृथिवी मंडल . बिजुली अति चमकाय ॥
कांप गई तब पृथिवी सारी . और उठी थहराय ॥
सिंधु मांझ अरु बड़े पानि में . तुमरो पंथ रहाय ॥
पांव केर जो चिन्ह तिहारे . सो नहि जान पराय ॥

भजन ७८ । देश । गीत ७८ ।

भूलो मत पहिले प्रभु क्या क्या . जन हित अद्भुत काम देखाई ॥
मिस्र देश में तासु पितर के . समुहे अद्भुत काम लखाई ॥
करि दो भाग सिंधु के प्रभु ने . उन को पार दियो पहुंचाई ॥
ढेर समान खड़ा किय जल को . अपनी महिमा प्रभु प्रगटाई ॥

आग ज्योति से निश भर दिन को . बादल से प्रभु किय अगुआई ॥
बन में जोइ चटान क चीरत . पीने को गहिराव बनाई ॥
चीरि चटान निकालत धारा . सरिता सम प्रभु पानि बहाई ॥
तासु विरोधी होय उन्हों ने . कीनो पाप महा समुदाई ॥
अति महान के आगे बन में . बहुत कियो जन मूढ़ लड़ाई ॥
सर्बशक्तियुत को निज मन में . यों परखा करि मूरुखताई ॥
निज इच्छा सम भोजन मांगे . भोजन देहै क्या सुबनाई ॥
प्रभु बिरुद्ध बोले क्या बन में . सकत शक्तियुत मंच बनाई ॥
चीरि सिला जल धार बहायो . क्या वह रोटी दे न सकाई ॥
अपने लोगन के हित सोई . सकत सिद्ध कर मांस मंगाई ॥
महा क्रोध प्रभु यह सुनि कीनो . प्रभु पै वे विश्वास न लाई ॥
राखि न भरोसा ताहि मुक्ति पै . वे सबरे फिर पाप कमाई ॥

प्रभु ने जब ही मारा उन को . सबरे तब तिहि ढूंढ़ फिराई ॥
सर्बशक्तियुत के सब खोजी . तुरत भये मन में पछिताई ॥

भजन ७६ । सिंदूरा । गीत ७९ ।

मोहि निर्बल पै कृपा करो प्रभु . योसु कृपानिधि प्यारे ॥
कब लों क्रोधित सदा रहेगा . हे परमेश हमारे ॥
बरा करेगा आग समाना . कौलों ज्वलन तिहारे ॥
अगिली पीढ़िन केर जोइ है . अगणित पाप पहारे ॥
विषय हमारे स्मरण करो नहि . तुमही नाथ सहारे ॥
तुरत करो तुमरी प्रभु दाया . आवै अग्र हमारे ॥
हम अति क्षीण भये अति दुर्बल . हे स्वामी सुखकारे ॥
मोर सहाय करो निज नाम कि . महिमा हित जगतारे ॥

हमैं छुड़ा निज नाम कि कारण . क्षमा करो अघ सारे ॥
कहैं विदेशी काहे उन का . ईश्वर अहे कहां रे ॥
बंधुअ का है जोइ करहना . पहुंचे अग्र तिहारे ॥
मृत्यु शिशुन को जीता राखो . निज महिमा अनुसारे ॥
तव चराइ के भेड़ैं तेरो . मनिहैं धन्य सदा रे ॥
स्तुति वर्णन करिहैं प्रभु तेरो . सगरे पीढ़ि मझारे ॥

भजन ८० । सुहब राग । गीत ८० ।

हे परमेश्वर सेनापति तूं . स्थिर कर फेर हमै जगराई ॥
हे प्रभु अपनो मुख चमकाओ . जासे हम सबरे बच जाई ॥
हे इसरायल के चरवाहे . सुनु अब मेरी कान लगाई ॥
झुंड कि नाईं निज बंदन को . तुमही करत सदा अगुवाई ॥

आंशु कि रोटी उन्हें खिलायो . मटके भर भर आंशु पिलाई ॥
हमैं परोसिन के हित तुमहीं . कारण झगड़े का ठहराई ॥
मुदित करत हैं अपने को सब . हमरे सबरे बैरि जु आई ॥
तेरा कर निज दहिने करके . नर पै होय सदा सुखदाई ॥
ता नर के सुत पै तु जाको . पोस्यो निज हित स्वामि सहाई॥
हे प्रभु तुम से हम न फिरेंगे . मोहि जिलैहो हे जगराई ॥
नाम पुकारेंगे हम स्वामी . तेरा ही सब काल अघाई ॥

भजन ८१ । भैरव । गीत ८१ ।

तुमरो बल है जोई ईश्वर . गाओ ताहि पुकारी ॥
मेरे लोग सुनो मैं देहौं . साक्षि विरुद्ध तिहारी ॥
बोलूंगा मैं हे इसरायल . यदि तू सुने हमारी ॥

सर्वशक्तियुत और न कोई . तेरो होय मझारी ॥
दूजे सर्वशक्तियुत केरो . तू नहि होउ पुजारी ॥
मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर . किय तोहि मिसर नियारी॥
अपना मुख फैलाओ ताको . मैं भर देहौं झारी ॥
मेरे लोग शब्द के मेरे . भये न सुननेहारी ॥
इसरायल ने हमें न माना . चलि निज मत अनुसारी ॥
उन के चित्त खराई पै मैं . छोड़ दिया तिहि सारी ॥
चलें हमारे मग इसरायल . होय सुने जन ह्यारी ॥
तो मैं तुरत झुकाऊं उन के . बैरिन को फटकारी ॥
फेरूं अपना हाथ उन्हों के . जोइ सतावनहारी ॥
ईश्वर से जो बैर रखत हैं . तासे दबिहैं भारी ॥
उन का समय सदा लों रहिहै. अति उन्नत सुखकारी ॥

भजन ८२ । मल्लार । गीत ८२ ।

सर्बशक्तियुत कोर सभा में . खड़ा होत जगराई ॥
कारिहै जाइ बिचार बीच में . देवन के सुखदाई ॥
कौलों अघ से सोच करोगे . दुष्टन पक्ष उठाई ॥
दुर्बल और अनाथन केरा . सोच करो चित लाई ॥
दुःखी और कंगालन केरो . न्याय करो मुददाई ॥
दुर्बल रंकन को तु छुटाओ . दुर्जन हाथ बचाई ॥
वे नहि जानत नहि समझेंगे . चलत अंधेरे आई ॥
पृथिवी केरी सारी नेवैं . जैहैं होल हहाई ॥
हे प्रभु उठो करो पृथिवी का . तुम बिचार मन लाई ॥
लेहो सारे जातिगणों के . तू अधिकार मझाई ॥

सर्वशक्तियुत हे प्रभु चुप नहि . रहो चैन नहि धारे ॥
तेरे डाही सीस उठावत . तेरे बैरी शोर मचावत ॥
तेरे जन पै कपट विचारत . वे सब दुष्ट खुआरे ॥
तेरे छिपे हुओं के जोई . चिंता करत बिरुद्ध सु ओई ॥
कहा उन्हों ने आओ उन को . डालें काटि सकारे ॥
एक जाति सब रहै न जाते . हो न नाम इसरायल ख्याते ॥
तव बिरुद्ध वे नियम बंधाते . सब मिलि मन सुबिचारे ॥
हे प्रभु कर तिहि वौंडर नाईं . वायु सामुहे तुष समताईं ॥
आग यथा वन देत जलाई . दहत लवर गिरि सारे ॥
तैसाही निज आंधि वहैहो . उन को हे प्रभु तू पिछिऐहो ॥
निज झकोर से उन्हें डरैहो . तिहि मुंह भरो चपा रे ॥

जनिहैं लोग तुही हो ओई . जासु नाम परमेश्वर होई ॥
केवल सकल भूमि पै सोई . हे महान सुखकारे ॥

भजन ८४ । नट रागिनी । गीत ८४।

प्रभु को जो है मंडलि सोई . स्थान शांति सुख पावने ॥
हे परमेश्वर तेरे तंबू . कैसे हैं मन भावने ॥
प्राण हमारो है अभिलाषी . हेतु प्रभू के आवने ॥
मूर्छित भी है चित्त हमारो . अरु तन जियत सुहावने ॥
शब्द करत है आनंद केरा . सर्बशक्तियुत कारने ॥
घर पाया है सब गौरैये . खोंथा पाय सुपाविने ॥
अपने गदे रखत जहां हैं . तुमरी वेदी भावने ॥
हे परमेश्वर मेरे राजा . सेनापति सुखदायने ॥

तेरे घर के बासी सारे . क्याही धन्य सुहावने ॥
सदा सभी वे किया करेंगे . तेरी स्तुती मनावने ॥
क्याही धन्य मनुज है जाको . तुम से है बल पावने ॥
हे परमेश्वर ढाल हमारो . देखो हे दुख हारने ॥
उन के मुख पै दृष्टि करो तू . है अभिषिक्त जु आपने ॥
भला हजारन से है सोई . एक दिन तेरे आंगने ॥
दुर्जन ताके तंबू मांही . रहना जोइ नशावने ॥
तासु अधिक निज प्रभु डेवढ़ी पै . रहना मैं चुनि भावने ॥
बिभव अनुग्रह देहै सो प्रभु . जो रिपु ढाल सनातने ॥
जोइ खराई से हैं चलते . तासु भलाइ सुदायने ॥
हे परमेश्वर है वह क्याही . धन्य महान सुहावने ॥
तुम पर जोइ भरोसा रखता . मानुष हे दुख दारने ॥

मेरे मुक्ति सुदानी ईश्वर . आओ पास हमारे ॥
हम पर से निज रिस को रोको . मैं अति दीन दुखारे ॥
रिसियावेगा सदा काल लों . क्या हम से है प्यारे ॥
अपना क्रोध बढ़ाते रहिहो . क्या तुम पीढ़ी सारे ॥
नहीं फिरैहै क्या तू मोको . नहीं जिलैहै क्या रे ॥
आनंदित क्या होइहैं नाहीं . तुम से लोग तिहारे ॥
अपनी दया हमैं दिखलाओ . हे परमेश्वर प्यारे ॥
अपनी मुक्ति हमैं तू देहै . निश्चय हे रखवारे ॥
मैं सुनिहौं कि सर्वशक्तियुत . करिहै क्या सुपुकारे ॥
निज जन हित अरु साधुन के हित . कुशल बचन परचारे ॥
मूरखता की ओर फिरें नहि : जासे वे नर सारे ॥
केवल मुक्ति पास है उन के . जो तिहि डरनेहारे ॥

जाते बिभव हमारी भू मे . बास करे सब कारे ॥
चूनि चुके हैं धर्म कुशल मिलि . दया सचाई सारे ॥
झांकत धर्म स्वर्ग से भू से . उगत सचाई प्यारे ॥
प्रभू भलाई देहै निज फल . देहै भूमि संवारे ॥
उस के आगे चला करेगा . धर्म सदा सुखकारे ॥
ताके डग के मारग पै मुहि . राखिहै सो जगतारे ॥

भजन ८६ । देश धनाश्री । गीत ८६ ।

कान लगाय सुनो प्रभु मेरी . मैं अति दुःखी दीन भिषारी ॥
मैं अनुकंपित हों प्रभु तेरा . मेरे प्राण की कर रखवारी ॥
निज सेवक की तुमहि बचाओ . तुम पर आस रखत जो भारी ॥
हे प्रभु मो पै दया करो तू . प्रतिदिन तुम को रहत पुकारी ॥

कान लगाय विनय सुन मेरी . विनय शब्द पै करो बिचारी ॥
निज बिपत्ति दिन तोहि पुकारिहैां . सुनिहैा हे प्रभु तुमहिं हमारी ॥
तेरे सम नहि देवन में कोइ . कारज है नहि तुल्य तिहारी ॥
सकल जातिगण जाहि तु सिरज्यो . करिहैं आय दण्डवत भारी ॥
करिहैं नाम कि तोर बड़ाई . तुमहि महान सु अद्भुत कारी ॥
केवल हैा प्रभु ईश्वर तुमही . निज पथ मोहि दिखा सुखकारी ॥
तेरि सचाई में मैं चलिहैं . सावधान कर चित्त हमारी ॥
जाते डरूं नाम से तेरे . चित से करिहैां स्तुती तिहारी ॥
सदा तिहारे नाम कि करिहैां . अति बड़ाइ ईश्वर दुखहारी ॥
मो पर बड़ी दया है तेरी . मेरे प्राण को हे जगतारी ॥
अति नीचे पाताल लोक से . तुमहि छुटायो हे प्रभु न्यारी ॥

भजन ८७ । राग सुहब । गीत ८७ ।

हे सैहून पवित्तर नगरी . हे सैहून पवित्तर नगरी ॥
अधिक प्यार करता है तेरे . सब फाटक को परमेश्वरी ॥
कही गई है बात बिभवमय . तुम से परमेश्वर केर पुरी ॥
जैहै कहा विषय सैहुन के . जनमे यह वह जन सब तहं री॥
अति महान परमेश्वर ताको . स्थिर करिहै सब काल सुघर री॥
जैहै लिखी जातिगण जबही . प्रभु तब गिन है तहं यह भय री॥
सबरे सोते जोइ हमारे : सब हैं तुझ में प्रभु जान परी ॥

भजन ८८ । ठुमरी । गीत ८८ ।

तेरे सन्मुख दीन दुहाई . निशदिन हे मेरे मुक्ति के राय ॥
तेरे सन्मुख बिन्ती मेरी . पहुंचै हे सुखदाय ॥
रोदन मोर सुनो हे स्वामी . अपनो कान लगाय ॥

गर्त गिरनहारे संग मांही . जात गिना मैं आय ॥
निर्बल नर सम भयो दुःख से . मोर आंख धुंधुलाय ॥
हे परमेश्वर तोर दुहाई . दोनो मैं चित लाय ॥
पहुंचेगी प्रभु तेरे सन्मुख . काहि विनय मम राय ॥
त्यागिहो प्राण मोर केहि कारण . निज मुख मोसे छिपाय ॥
लड़काई से मैं हों दुःखी . अब मरना नियराय ॥
मैं ने तेरे सहा भयों को . अब तो गयो घबराय ॥
कोपानल तब मो पै बीता . मोहि काट्यो भय आय ॥
पानी सम मोहि दिन भर सबरे . घेरे मांझ रखाय ॥
अकस्मात मोहि चहूं ओर से . घेर लियो घहराय ॥
दूर कियो तू हम से स्वामी . प्रिय अरु मित्र सहाय ॥
मेरे चीन्ह पहिचान जोइ सो . स्थान अंधेरे आय ॥

गाया करिहैां सदाकाल मैं . ईश्वर की दयताई रे ॥
सब पोढ़ी लों अपने मुख से . कहिहैां तोर सचाई रे ॥
मैं ने कहा दया का घर जो . जैहै सदा बनाई रे ॥
स्थिर रखिहो तुम स्वर्गलोक पै . को नर होय सकाई रे ॥
सर्बशक्तियुत के सुत मांहीं . प्रभु सम कैान हुआई रे ॥
अपने सिद्धन केर सभा में . जाइ भयंकर आई रे ॥
सर्बशक्तियुत ताहि प्रभू के . को समान हो जाई रे ॥
चारो ओर रहत जो उन से . योग्य महां महताई रे ॥
को बलवान् प्रभू सम तोरे . तव निज निकर सचाई रे ॥
लहर उठत अति चंड सिंधुको . थामि कियो प्रभुताई रे ॥
घायल सम तू कुचिलि रहबको . निज भुज शत्रु मिटाई रे ॥
[illegible] पृथिवी तेरो आई रे ॥

शक्तियुक्त है हाथ तिहारो . भुज है बल समुदाई रे ॥
दहिना हाथ तिहारो ऊंचा . सदाकाल सुखदाई रे ॥
धर्म बिचार सिंहासन केरा . स्थान तिहार सुहाई रे ॥
चला करेंगे तेरे मुख के . आगे सत्य दयाई रे ॥
मंगल शब्द जातिगण जानै . जो सो धन्य बड़ाई रे ॥
तेरे मुख की ज्योति में हे प्रभु . चलिहैं सोइ सदाई रे ॥
सारे दिन आनंद रहेगा . तेरे नाम से राई रे ॥
तेरे धर्म से ऊंचा होइहै . हे परमेश सहाई रे ॥

भजन ९० । टप्पा राग । गीत ९० ।

सब पीढ़ी लों स्थान शरण का . तू मेरो जगराया हो ॥
पर्बत रचने से तू पहिले . पृथिवी जगत बनाया हो ॥

सर्बशक्तियुत हो प्रभु तुमही . सदा काल सुख दाया हो ॥
धूर मिलावत नर को कहता . नर सुत फिरो तु राया हो ॥
बर्ष हजार दृष्टि में तेरी . काह्लि समान लखाया हो ॥
बीत गया जो राति समै का . एक पहर समताया हो ॥
उन्हें बहा ले जाता तू हो . मानो नींद सुहाया हो ॥
जात रहैंगे काह्लि समै के . घास समान नशाया हो ॥
फूल बिहान नशात सांझ को . कटि के जात सुखाया हो ॥
कोप से तेरे नाश भये हम . अति व्याकुल घबराया हो ॥
मेरे जीवन के दिन उन में . सत्तर बरस सुहाया हो ॥
यदि बल से हो असी बरस तहुं . तासु गरब दुखदाया हो ॥
हमैं ज्ञान दे ऐसा जाते . निज दिन गिनें हहाया हो ॥
बुद्धिमान मन भेंट के कारण . हम ले हैं मुददाया हो ॥

जीवन भर आनंद करैंगे . मगन रहैंगे राया हो ॥

भजन ९१ । ख्याल राग । गीत ९१ ।

ईश्वर से मैं कहिहैं तूही . स्थान शरण गढ़ मेरा रे ॥
मेरा ईश्वर है तू जिस पै . रखत भरोस घनेरा रे ॥
व्याध जाल से अधिक मरी से . देहै मुक्ति निवेरा रे ॥
निज पर से वह ढांपिहै तोको . शरण पंख तर तेरा रे ॥
उस की जोइ सचाई तेरी . ढाल फरी सब बेरा रे ॥
रात समै भय से तू नाहि . डरिहै होय दिलेरा रे ॥
उन बाणन से नाहि डरोगे . उड़त दिवस के बेरा रे ॥
अंधियारे में चलत मरी से . होइहै नाहि दुखेरा रे ॥
दुपहर में जु विनाश उजाड़त . तासे डर तु विखेरा रे ॥

सहस सहस्त्रों ऊपर गिरिहै . दहिना हाथ सुतेरा रे ॥
तेरे पास सहस्र गिरेंगे . तुझ लों बिपत न झेरा रे ॥
अपनी आंखन से तू केवल . करिहै दृष्टि घनेरा रे ॥
देखेगा सब पलटे को तू . जोई दुर्जन केरा रे ॥
हे परमेश्वर स्थान शरण का . तुमही और न मेरा रे ॥
ठहराया तू अति महान को . अपना शरण सुहेरा रे ॥
तेरे घर लों बिपति न ऐहै . मरी न करिहै डेरा रे ॥
तेरे हित निज दूतन को वह . करिहै आज्ञा टेरा रे ॥
जाते तेरे सारे पथ में . करैं सुरक्षा तेरा रे ॥
अपने हाथों पै वे सारे . तुमै उठैहैं घेरा रे ॥
जातें पत्थर पै नहि पटके . अपना पांव तु जेरा रे ॥

तेरे नाम की स्तुति में करना . गान भला जगपाल ॥
वर्णन करें दया का तेरे . हम काहू दीन दयाल ॥
वर्णन करें सचाई केरा . निशि को तोर कृपाल ॥
निज कारज से मोदित कीनो . मोको तु रखवाल ॥
तेरे हाथ के कर्म से करिहों . आनंद शब्द भुआल ॥
क्याहि बड़ा तव कारज चिंता . अति गहिरी जनपाल ॥
जानिहै नहिपशु सम जन उस को. समुझि न मूढ़ दयाल ॥
दुष्ट घास सम उगते फूलत . सकल कुकर्म्मि दयाल ॥
उन के सदा नाश के कारण . होइहै यह तत्काल ॥
अति महान हो हे परमेश्वर . तुमही प्रभु सब काल ॥
लहलहायगे धर्म्मी सारे . पेड़ खजूर मिसाल ॥
देवदारु लुबनान केर तरु . ता सम बढ़िहै पाल ॥

ईश्वर के घर मांझ लगाये . गये जोइ शुभकाल ॥
लहलहांयगे मेरे प्रभु के . आंगन में सुख साल ॥
फलिहैं वही बुढ़ाई में भी . रहि मोटे हरियाल ॥
जाते बर्णन करे हमारा : ईश्वर खरा दयाल ॥
मोर चटान प्रभू है उस में . नेकु अनीति न चाल ॥

भजन ९३ । भैरव राग । गीत ९३ ।

हे मनुआ भज तू प्रभु को जो . जगके पालनहारे ॥
पहिने वस्त्र बिभव का ईश्वर . राज्य करत सब कारे ॥
बल का वस्त्र पहिनि परमेश्वर . निज कटि बांधि तयारे ॥
अटल रहेगा सदा जगत भी . अटल सिंहासन थारे ॥
तुम्हहि सनातन से हो स्वामी . नदियन को तु उभारे ॥

महा भयंकर चंड सिंधु के . उठत लहर जो भारे ॥
उन से प्रभू उंचाई माहीं . अति बलवान प्रचारे ॥
अति सच्ची है तेरी साची . हे परमेश्वर प्यारे ॥
सदा काल लों तेरे घर को . फबत शुद्धता सारे ॥

भजन ९४ । भैरवी । गीत ९४ ।

न्याय करेगा निश्चय जग का . महराजा सुखदानी ॥
कान केर जो रचनेहारा . सुनिहै क्या नहिं बानी ॥
आंख क जोइ बनावनहारा . देखिहै क्या न महानी ॥
जातिगणों का शिक्षक ताड़न . करिहै क्या नहिं जानी ॥
सब को शिक्षा दे न सकै क्या . नर को देत जु ज्ञानी ॥
नर चिन्ता को ईश्वर जानत . हैं सब झूठ मुठानी ॥

हे प्रभु क्याही धन्य मनुज सो . जाहि तु ताड़न ठानी ॥
अपनि व्यवस्था से प्रभु उस को . तुमहि सिखावत दानी ॥
बिपति दिनों से ताहि बचाके . चैन देउ तू त्राणी ॥
गड़हा खोदा जाय जभी लों . दुष्ट हेत शुभखानी ॥
निज अधिकार न छोड़िहै त्यागिहै. निज जन को न महानी ॥
यदि परमेश्वर मोर सहायक . होता नहिं जग आनी ॥
मेरा प्राण तुरत हो जाता . चुपका पड़ि सुनसानी ॥
यदि मैं कहूं चरण जो मेरा . टलन चहै फिसलानी ॥
मोहि संभालिहै तेरी दाया . हे परमेश्वर त्राणी ॥
मेरे मन में जबही चिन्ता . बढ़ती अति अधिकानी ॥
तोर शांति तब मेरे प्राण को . करत अनंदित घानी ॥

अपनी मुक्ति चटान के ओरा . हर्षित हो ललकारे ॥
प्रभु के आगे धन्यवाद के . आवें साथ सुखारे ॥
गीतों के संग प्रभु की ओरा . ललकारें सुपुकारे ॥
सब देवन पै सो महराजा . महा महेश्वर तारे ॥
भू गहिराई शैल उंचाई . जाके हाथ मझारे ॥
स्थल जल भूमि सिंधु है उस का . किय सो तिनहि तयारे ॥
आओ करें दण्डवत मिलिके . झुकें प्रेम मन धारे ॥
घुटने टेकैं ईश्वर आगे . जो निज रचनेहारे ॥
तासु चराई के हम सबरे . ईश्वर सोइ हमारे ॥
जो अब उस का शब्द सुनो तुम . प्रभु कर भेड़ो सारे ॥
कठिन करो नहि अपने मन को. जासे होय उधारे ॥

भजन ९६ । आसावरी । गीत ९६।

सारी पृथिवी ईश्वर के हित . गीत नया तुम गाय सुनाओ ॥
ईश्वर के हित गाओ प्रभु के . नाम केर धनि मानि सुहाओ ॥
प्रतिदिन महिमा मुक्ति प्रभू की . सकल विदेशिन में प्रकटाओ ॥
सारे लोगन में प्रभु केरे . अद्भुत काम सदा तु लखाओ ॥
स्तुति अति योग महा परमेश्वर. देवन पै भयकार प्रभाओ ॥
जातिगणों के सकल देवते . तुच्छ असार अशक्त लखाओ ॥
सकल प्रतिष्ठा महिमा उस के . हैं आगे जो स्वर्ग बनाओ ॥
बल अरु सुन्दरता प्रभु केरे . धर्म धाम में सदा लसाओ ॥
करो दंडवत ईश्वर को तू . शुद्धि सुन्दरता के संग आओ ॥
सारी पृथिवी है प्रभु केरे . सन्मुख कांपो भीति समाओ ॥
कहो विदेशिन में परमेश्वर . राज्य करत जग अटल सुनाओ ॥
करिहै सोई जातिगणों का . संग खराइ विचार सुहाओ ॥

बन के सकल पेड़ प्रभु आगे . करिहैं आनन्द शब्द सदाओ ॥
भूमि केर सो न्याय करन के . आवत जो महराज कहाओ ॥
जग का न्याय करेगा सोई . धर्म साथ जग दुःख मिटाओ ॥
निज सचाइ के साथ करेगा . जातिगणों का न्याय पुराओ ॥

भजन ९७ । आसावरी । गीत ९७ ।

राज्य करत परमेश्वर पृथिवी . हर्षित होय सदाई रे ॥
सारे टापू हर्षित होवैं . मन में हर्ष समाई रे ॥
काली घटा मेघ हैं उस के . आस पास नियराई रे ॥
स्थान सिंहासन का प्रभु केरा . धर्म न्याय शुभ आई रे ॥
उस के आगे आग चलत है . चहुं दिशि शत्रु जलाई रे ॥
प्रभु बिजुली करि जग उंजियाला . लखि पृथिवी थहराई रे ॥

मोम समान प्रभू के आगे . सब पर्बत पिघलाई रे ॥
प्रगट करत है तासु धर्म को . स्वर्ग सदा प्रभुताई रे ॥
सारे लोग बिभव को उस के . देखत दृष्टि फैलाई रे ॥
खोटी मूरत केरे सारे . पूजनहार जु आई रे ॥
अरु फूलत हैं तुच्छ बस्तु पै . जैहैं सभी लजाई रे ॥
सकल देवगण करो दण्डवत . उस को सीस झुकाई रे ॥
धर्म्मी नर के हित उंजियाला . बोया गया सुहाई रे ॥
अन्तःकरण खरा है जिस का . ता हित मुद अंखुआई रे ॥
ईश्वर से सब धर्म्मी लोगो . हर्षित होउ सदाई रे ॥
तासु शुद्धता बर्णन के संग . धन्यबाद करु भाई रे ॥

भजन ९८ । खेमटा । गीत ९८ ।

शुद्ध भुजा दहिना कर प्रभु का . भक्त किये निरभीत ॥
अपनी मुक्ति प्रगट किय सोई . पाप पुञ्ज जग जीत ॥
प्रगट किये जु बिदेशि दृष्टि में . अपने धर्म सुरीत ॥
अपनी दाया और सचाई . स्मरण किये चितचीत ॥
इसरायल के जोइ घराने . तिन के हेत बिनीत ॥
पृथिवी के सब खूंट प्रभू की . लख्यो मुक्ति अति प्रीत ॥
ईश्वर और सकल हे पृथिवी . ललकारो लय रीत ॥
निकलो फूट करो सब आनन्द . गाउ बजाके गीत ॥
नदियां ताल बजावैं पर्बत . हर्षित होंय निरीत ॥
गर्जन करें सिंधु भरपूरी . प्रभु केरी नित नीत ॥
जग अरु उस के रहनेवाले . गाउ प्रभू की प्रीत ॥
पृथिवी का प्रभु न्याय करन को . आवत दुःखी मीत ॥

धर्म्म साथ जग का वह स्वामी . करिहै न्याय उचीत ॥
न्याय करेगा सब लोगन का . साथ खराई नीत ॥

भजन ९९ । लाउनी । गीत ९९।

राज्य करत परमेश्वर सबरे . जाति बृंद थहराता रे ॥
तेरे भयकर बड़े नाम को . करिहैं महणा सुहाता रे ॥
वही पवित्तर है जग माहीं . अरु दूजा न दिखाता रे ॥
नृप का बल बिचार से प्रीती . रखता सदा चहाता रे ॥
न्याय धर्म याकूब में तूही . कीन खराइ स्थिराता रे ॥
मेरे ईश्वर केर बड़ाई . करो मुदित हो गाता रे ॥
कर प्रणाम प्रभु चरण पीठ को . जोई शुद्ध लखाता रे ॥
याजक के बिच मूसा हारुन . अरु समुएल सुहाता रे ॥

घन खंभे से उन से बातें . करता वह जग पाता रे ॥
पालन किया उसे जो उस्से . आज्ञा साक्षि मिलाता रे ॥
हे परमेश्वर मेरे ईश्वर . सुनी तु उन की बाता रे ॥
करनेहारा क्षमा केर तू . उन के हित हो त्राता रे ॥
सर्बशक्तियुत सदा सहायक . तुमही और न दाता रे ॥
लेनेहारा पलटा उन के . कुकरम का जग ताता रे ॥

भजन १०० । तोटक छंद । गीत १००।

करिके धनिवाद सभी पृथिवी . ललकारहु ईश्वर ओर अरे ॥
कर सेवन ईश्वर केर सदा . संग आनन्द के नर हे सबरे ॥
जय शब्द के साथ प्रभू पितु के . अब सन्मुख आव चले नियरे ॥
परमेश्वर है वह जानु हमै . निज जाति चराई कि भेड़ करे ॥

कर फाटक आंगन में प्रभु के . परवेश स्तुती धनिवाद ररे ॥
प्रभु नाम क धन्य कहो उस का . धनि मानु सदा अति हर्षित रे ॥
परमेश्वर सोइ भला अति है . सब काल दया उस की जग रे ॥
सब पीढ़िन से सब पीढ़िन लों . प्रभु केर सचाई बिराजत रे ॥

भजन १०१ । मल्लार राग । गीत१०१।

न्याय दया का तेरी स्तुति में . गैहैं गीत बजाई ॥
मैं दिखलैहैं अपन चैाकसी . सिद्ध पंथ में आई ॥
ऐहै। कब तू पास हमारे . हे परमेश सहाई ॥
अपने घर के भीतर चलिहैं . सिद्ध चित्त से राई ॥
निज आंखन के अग्र न रखिहैं . जोई बात बुराई ॥
रखिहैं बैर कुटिलता करने . हम से नहि लपटाई ॥

पृथिवी के बिश्वस्तन ऊपर . मेरी आंख लगाई ॥
मेरे संग रहें जो चलते . सिद्ध पंथ में जाई ॥
मेरी सेवा करिहै सोई . और सबै भटकाई ॥
झूठा कपटी मेरे घर के . भीतर रहि न सकाई ॥
मेरे आंखन के वह सन्मुख . ठहरेगा न सदाई ॥

भजन १०२ । गौरी राग । गीत १०२।

तुम लों पहुंचे मोर दुहाई . बिनै सुनो प्रभु मेरी ॥
हम से अपना मुंह न छिपाओ . और हमारे कान लगाओ ॥
बिपति समय जब तोहि पुकारूं . तब तू सुनहु अबेरी ॥
धुआं में बीता दिवस हमारो . जले अस्थि लुकटी सम सारो॥
घास समान चित्त कुम्हलाना . सूख गला बहुतेरी ॥

भूला मैं निज रोटी खाना . मेरी हड्डी मांस सटाना ॥
शब्द कराहन से अब मेरो . मैं हों अति दुखजेरी ॥
बनज गरुड़ के सम मैं आई . खंड़हर उल्लू तुल्य हुआई ॥
छत पै रहत अकेल जु पक्षी . ता सम जाग रहे री ॥
सब दिन मेरे बैरी सारे . मोपै निन्दा करत खुआरे ॥
हैं वे मत्त बिरोध मझारे . कोशत नाम सुटेरी ॥
रोटी सम हम खाक फंकाया . निज पानी में आंशु मिलाया॥
तेरे जलत कोप के कारण . मोहि फेंक्यो तु उटेरी ॥
प्रथम भूमि की नेव तु डाली . तेरो कर किय स्वर्ग तयारी॥
रहिहो अटल तुहो सब वे तो . होइहैं नाश अबेरी ॥
बस्त्र समान पुराने होइहैं . तासम उन को तू पलटैहै॥
पलट जायंगे सबरे ओई . इक सम तुही रहे री ॥

भजन १०३ । भैरव ।　　　　　　गीत१०३ ।

धन्य कहो परमेश्वर को तू . हे प्रिय प्राण हमारो ॥
सब जो मुझ में हो प्रभु केरे . नाम पवित्र पुकारो ॥
उस के सब उपकार न भूलो . क्षमा करत अघ सारो ॥
करत निरोग समाधि से तेरो . प्राण छुड़ावत न्यारो ॥
तुम पर जोइ अनुग्रह केरो . मुकुट रखत सुखकारो ॥
जोई करत भलाई से प्रभु . प्राण सुतृप्त तिहारो ॥
गिद्ध तुल्य तरुणाई तेरो . निज को नुतन सवांरो ॥
बड़ा दया में क्रोध में धीमा . ईश्वर दया पहारो ॥
करिहै झगड़ा सदा न रखिहै . कोप प्रभू सब कारो ॥
मेरे अघ सब सो नहि कीनो . मेरे संग व्यवहारो ॥

डरवैयन पै है दृढ़ दाया . ऊंच स्वर्ग ज्यों क्षारो ॥
दूर पूर्ब से पच्छिम ज्यों त्यों . किय मेरो अघ न्यारो ॥
डरवैयन पै करत दया प्रभु . ज्यों पितु बाल संभारो ॥
हम हैं माटी सुमिरत जानत . मोर बनावट सारो ॥
उस के दिन में घास समाना . नर जो मरनेहारो ॥
जैसा बन का फूल फूलता . तस फूलत छणवारो ॥
सदा काल प्रभु दाया उन पै . है जो डरनेहारो ॥
प्रभु का नियम जु धारण करते . सुमिरत जो बिधि सारो ॥
उन के पीढ़िन पै प्रभु अपनो . सदा सचाई धारो ॥
पूरा करें उन्हें सब याते . ईश्वर स्वामि सहारो ॥

भजन १०४ । चंचरी । गीत १०४ ।

मान प्रतिष्ठा प्रभुता सेहर . भूषित तासु तु आई ॥
बस्त्र समान ज्योति ज्यों धारी . घूंघुट सम दिव को विस्तारी ॥
भूमि नेव उस ठौर जु डारी . सो नहि कभी टलाई ॥
गहिराई से बसन समानी . ढांप्यो उस को तू प्रभु त्राणी ॥
खड़े होत हैं गिरिपै पानी . सोते जोइ बहाई ॥
गिरि के बीच बहत हैं जोई . बनज पशुन को प्यावत सोई ॥
बन गर्धभ के प्यास जु खोई . सब के तृषा मिटाई ॥
उन के ऊपर खग सब बसते . डालिन बिच चह चह स्वर करते ॥
ऊपर कोठरी से जो सिंचते . पर्बत के समुदाई ॥
तेरे कारज के फल से जो . पृथिवी होती तृप्त हमेशो ॥
घास उगावत पशु हित देखो . ऐसो सो सुखदाई ॥
सब नर जातें बोवें याते . रचि हरियाली प्रभू सुहाते ॥

सकल निकालें रोटी ताते . पृथिवी से मन भाई ॥
सब ऋतु हित तू चन्द्र बनायो . बासर हित तू रवि प्रगटायो ॥
तम अरु रात तूही फैलायो . बन पशु भ्रमै जहांई ॥
गर्जत फिरत शिकार के कारन . सिंह केर बच्चे अति दारुन ॥
सर्वशक्तियुत से वह आपन . ढूंढ़ शिकार फिराई ॥
भानु उदै जब होते तबही . होत इकट्ठे फिर फिर सबही ॥
निज निजमांदन में सब पड़हीं . जासे मिटै थकाई ॥
काम काज के हित नर सारे . बाहर निकरत होत सकारे ॥
सांझ समै लों करत बड़ा रे . मेहनत सबहि उठाई ॥
हे परमेश्वर तेरी रचना . क्याहो बहुत महा है लसना ॥
बुद्धि साथ सब तेरा करना . तव धन भूमि पुराई ॥

भजन १०५ । देशावरी । गीत १०५ ।

इश्वर केर धन्य तू मानो . तासु नाम से ताहि पुकारो ॥
जातिगणों में बड़े काम को . प्रगट करो उस के सबकारो ॥
उस के हेतु बजाके गाओ . सोच करो अद्भुत कृति सारो ॥
उस के शुद्ध नाम से फूलो . प्रभु खोजक मन सदा सुखारो ॥
ईश्वर अरु उस के बल ढूंढ़ो . तासु रूप रहु खोजनहारो ॥
स्मरण करो अद्भुत कृति उस की . अरु उस के मुख के जु बिचारो ॥
चांदी सोने के संग उन को . हे परमेश्वर तुमहि निसारो ॥
उन के गोष्ठिन में नहि ठोकर . है कोइ ऐस जु खानेहारो ॥
मुदित मिस्र रहि उन के निकले . उन का भय उन पर पड़ि सारो ॥
छाया हित वह घन फैलायो . आग रच्यो निशि हित उंजियारो ॥
वहु बटेर पहुंचायो उस ने . तिन को जो नर मांगनहारो ॥
स्वर्गी रोटी से किय तर्पित . दीनन के प्रभु जो रखवारो ॥

खोलि चटान सोइ प्रभु स्वामी . जल की धार बहाय प्रचारो ॥
नदी तुल्य वह चला जु सूखी . पृथिवी मांझ पियास निवारो ॥
अबिरहाम अरु तासु दास के . साथ रहा जो बचन प्रचारो ॥
स्मरण कियो निज ताहि बचन को . जो अति शुद्ध महा सुखकारो ॥
बाजा जोइ बजावत गावत . अपनो जाति केर गण सारो ॥
अपने चुने हुओं को सोई . मुद के संग सुहर्षि निसारो ॥
अन्यदेशि का देश दियो तिहि . जातिगणों का सब अधिकारो ॥
सकल परिश्रम पावत वे सब . जासे होंय सदाय सुखारो ॥
मनन करें उस की विधि याते . तासु व्यवस्था मानहिं सारो ॥

भजन १०६ । देशावरी । गीत १०६ ।

निज लोगन पै प्रगट करत तू . जोइ दया है ईश्वर त्राणी ॥

तेरे जन के आनंद से मैं . होंउ अनंदित हे सुखदानी ॥
तेरे प्रभु अधिकार के साथा . करूं बड़ाई मैं मनमानी ॥
निज पितरन सम पाप किया मैं . कीन कुटिलता दुर्जन बानी ॥
पितर हमारे मिसर देश में . तेरा अद्भुत कर्म न जानी ॥
तेरी दया केर अधिकाई . स्मरण कीन नहि वे अज्ञानी ॥
फिरिगे लाल समुद्र के ऊपर . वे सबरे अति भूल भुलानी ॥
अपन नाम हित तिन्हें बचाया . प्रगट किया निज शक्ति सुहानी ॥
उस ने लाल सिंधु का दपटा . वह अति सूखि भया बिन पानी ॥
जैसा बन में तैस चलाया . गहिराई में तिन्हें महानी ॥
शत्रु हाथ से उन्हें बचाया . मेटि सकल दुख की तुम खानी ॥
सकल शत्रु का ढांपि लिया जल . तिन में एकहु नाहि बचानी ॥
उस के मंत्र कि बाट न जाही . सब तिहि कारन तुरत भुलानी ॥

कीन कुइच्छा बन में सबरे . सर्बसमर्थी को परखानी ॥
इष्ट पूर किय उन की उस ने . भेजि चौगता असु में हानी ॥
होरेब में सब वस्तु बनायो . ढाली मूर्त्ति प्रणाम सुठानी ॥
घास खवैया वृष मूरति से . बदले निज ऐश्वर्य नदानी ॥
जोइ बचायो मिसर देश में . कारज किया बड़े जो चाणी ॥
सर्बसमर्थी ईश्वर प्रभु को . सबरे मूरख जाइ भुलानी ॥
कई बार वह उन्हें छुटायो . वे बिचार से दंगा ठानी ॥
निज अधर्म्म के कारण से वे . होन भये सबरे दुख खानी ॥

भजन १०७ । राग कल्याण । गीत १०७।

तू भज ईश्वर को मन लाई . सुनि दुखियन के जोइ दुहाई ॥
बन में सूने पथ में घूमत . नगर बास हित वे नहिं पाई ॥

याते रहने हित पुर पहुंचैं . सीधे पथ प्रभु की अगुआई ॥
सिंधु मांझ नौका पर चढ़िके . करत कर्म्म अति पानि मझाई ॥
गहिराई में सबरे प्रभु का . देखा अचरज काररवाई ॥
पवन प्रचंड उठा तेहि कहने . वह अपनी अति लहर उठाई ॥
गहिराई में जात हैं नीचे . हैं चढ़ते वे सरग उंचाई ॥
उन का प्राण अपाने ताईं . देत चलाय अतीव डराई ॥
जगमगात मतवाले के सम . ज्ञान सकल गे तासु नसाई ॥
बिपति मांझ प्रभु को जु पुकारा . ताहि उबारत क्लेश मिटाई ॥
आंधिन को वह शांति करत है . लहरन उन की जोइ थमाई ॥
मगन होत हैं वे सब तबहीं . इच्छा घाट मे तिन्ह पहुंचाई ॥
रंकन को दुख से जो उठायो . झुंड समान चरान बनाई ॥
हुइहैं मुदित खरे जन देखी . सकल पापि मुंह बन्द कराई ॥

बुद्धिमान है कौन जु करिहै . इन बातन का सोच हहाई ॥
बुद्धिमान नर कौन दया पै . प्रभु के धरिहै ध्यान सदाई ॥

भजन १०८ । राग मारू । गीत१०८।

स्थिर मन मेरो है परमेश्वर . ताल बजाके गाइहैं ॥
स्थिर है मोर बिभव हे बीणा . भोरे जाग जगाइहैं ॥
हे परमेश्वर जातिगणों में . तेरी स्तुति करि ध्याइहैं॥
सारे देशगणों में तेरी . स्तुति गाने में लाइहैं ॥
तेरी दया स्वर्ग के ऊपर . ऊंचो है तोहि पाइहैं ॥
मेघन लों है तोर सचाई . देशन में प्रगटाइहैं ॥
हो महान तू स्वर्ग के ऊपर . हे परमेश जनाइहैं ॥
तेरा बिभव सकल पृथिवी पै . होइ जासु दुख ढाइहैं ॥

मानुषीय यह मुक्ति बृथा है . दुःख सहाय कराइहैं ॥
रौंदेगा मम शत्रुन को वह . प्रभु से मैं बल पाइहैं ॥

भजन १०९ । कंगूरा । गीत १०९ ।

हे प्रभु अपने नाम हेत कर . मेरे संग व्यवहारा रे ॥
तेरी दया भली है स्वामी . मोहि छुटाव सकारा रे ॥
मैं अति दुःखी रंक महा हैं . घायल चित्त हमारा रे ॥
छाया सम जब वह फिर जाती . जात रहत मैं टारा रे ॥
टिड्डी के सम जात हंकाया . इत उत भ्रमत नियारा रे ॥
डगमगात हैं मेरे घुटने . अब उपवास के मारा रे ॥
मोटा कुछुक नहीं है ऐसो . घटि गय मांस हमारा रे ॥
हमें देखि निज सीस हिलावत . वे दुर्जन जन सारा रे ॥

उन के लिये हुआ मैं निन्दा . कर सहाय प्रभु म्हारा रे ॥
निज दाया सम मोहि बचाओ . तुही मोर रखवारा रे ॥
वे सब देहैं श्राप तु देहा . आशिष बचन प्रचारा रे ॥
वे उठिहैं अरु लज्जित होइहैं . हर्षित दास तिहारा रे ॥
दुर्नामी का बस्त्र पहिनिहैं . मेरे रिपुगण सारा रे ॥
पहिरेंगे निज लज्जा को वे . बस्त्र समान संवारा रे ॥
निज मुख से परमेश्वर केरा . मनिहैं धन्य उचारा रे ॥
मैं बहुतों के बिच में उस को . स्तुति करिहैं परचारा रे ॥
रंकन के दहिने कर पै जो . होइहै खड़ा अधारा रे ॥
उस के प्राण बिचारिन से वह . उसे बचावै न्यारा रे ॥

भजन ११० । चंचरी । गीत ११०।

जब लों शत्रुन को नहि तेरे . पग पीढ़ी करि थापी ।
राज दंड भेजिहै जग तारा . सैहुन से बल केर तिहारा ॥
अपने बैरिन केर मझारा . कर प्रभुता तु आपी ।
तेरे बल के दिन जन तेरे . शुद्धताई सुंदरता जो ढेरे ॥
ता संग भेंटि हैं अति मुद से रे . अति मंगल की झांपी ।
कोख से कल के हेत तिहारे . तरुणाई की ओस प्रचारे ॥
ईश्वर किरिया खाय पुकारे . नहि पछितैहै थापी ।
मलिकि सिदक के तुल्य सदाई . याजक रहिहै भेद न आई ॥
यामें कुछुक न संशय पाई . सत्य बचन यह छापी ।
तेरे दहिने कर पै मारा . भूपन को क्रुध दिवस मझारा ॥
करिहै जातिगणों म बिचारा . श्री प्रभु सो वह आपी ।

भजन १११ । भैरवी । गीत १११ ।

ईश्वरतायुत महा प्रतिष्ठित . कारज ईश्वर केरा ॥
सदा काल लों धर्म प्रभू का . अटल सुहात घनेरा ॥
प्रभु निज अद्भुत कर्मन के हित . रक्खा चिन्ह निवेरा ॥
है परमेश्वर महा दयाला . रक्षक सो जग केरा ॥
निज डरवैयन को जो दीनो . सोई प्रभू अहेरा ॥
स्मरण रखेगा अपनी बाचा . सदाकाल प्रभु मेरा ॥
निज लोगन से बर्णन करिहै . निज कारज बल टेरा ॥
अन्य विदेशिन का अधिकारा . उन्हे देन हित हेरा ॥
उस के कर की क्रिया सत्यता . अरु बिचार बल सेरा ॥
सकल सत्य हैं उस की आज्ञा . निर्मल शुद्ध घनेरा ॥
कीन गये स्थिर सदा सचाई . संग सरल है ढेरा ॥
निज लोगन को मुक्ति दिई है . निज जन कीन सुखेरा ॥

बुद्धि केर आरंभ प्रभू का . भय है जगत मझेरा ॥
उन सब के जो माननहारे . श्रेष्ठ बुद्धि तिन्ह केरा ॥
सदाकाल लों स्थिर है उस को . स्तुति उत्तम घन घेरा ॥

भजन ११२ । मलार । गीत ११२।

क्या अति धन्य मनुष्य सोइ है . ईश्वर से जु डराय ॥
आज्ञाओं पै प्रभु के जोई . हर्षित होत हहाय ॥
होइहैं उस का बंश भूमि पै . अति बलवन्त सुहाय ॥
होइहैं आशिषयुक्त खरों के . संतति अति सुख पाय ॥
धन संपति है उस के घर में . स्थिर तिहि धर्म सदाय ॥
हेतु खरों के अंधियारे में . उंजियाला प्रगटाय ॥
जोइ कृपाल दयाल सुधर्मी . जोई स्वामि सहाय ॥

करत अनुग्रह च्तण जो देता . क्या धनि सो नर आय ॥
निज कामन को जोइ सुधरिहै . वहु बिचार फैलाय ॥
ऐसो अचल अटल दृढ़ जोई . कबहूं नाहि हटाय ॥
जैहै स्मरण कोन तिहि केरा . धर्मी होन सदाय ॥
कुत्सित समाचार से सो नहि . करिहै भय घबड़ाय ॥
उस का मन है दृढ़ प्रभु ऊपर . जोइ भरोस रखाय ॥

भजन ११३ । पूर्वी । गीत ११३।

हे परमेश्वर के सब दासो . भजन करो हरषाय रे ॥
ईश्वर केरे नाम कि सबरे . करहु सदा स्तुति गाय रे ॥
धन्य प्रभू का नाम सदा लों . अब से होय रहाय रे ॥
स्तुति हो प्रभु के नाम कि रबि के . उदय अस्त लों आय रे ॥

मेरे प्रभु के सम नहिं कोई . भूमि सरग पै आय रे ॥
रहत उंचाई पै जो नीचे . देखत ताक लगाय रे ॥
सब कंगाल नरन को रज से . जो प्रभु लेत उठाय रे ॥
घूरे से सब दीन जनों को . करिहै जोइ उंचाय रे ॥
ताहि अधिप संग निज जन केरे . अधिपति संग बैठाय रे ॥
बालक सुख के करनेहारी . माता बांझ बनाय रे ॥

भजन ११४ । सिंदूरा । गीत ११४।

स्मरण करो निज दासन को प्रभु . खोलि सिंधु किय बाणा ॥
जब इसरायल मिसर देश से . अरु याकूब घराना ॥
निकलि विदेशी भाषा केरी . जाति से कीन पयाना ॥
तब उस का सब धर्म धाम जो . यहूदाह सो ठाना ॥

उस का राज्य भयो इसरायेल . शोभित जोइ महाना ॥
यरदन उलटी बहन लगी तब . देखि समुद्र पराना ॥
भेड़ शिशु सम उछलिं पहाड़िया . पर्बत मेढ़ समाना ॥
भागत है तू तोहि भयो क्या . है सिंधू भयमाना ॥
उलटी बहती तू हे यरदन . तू ने क्या डर माना ॥
हे सब पर्बत तुमै भयो क्या . उछलत मेंढ़ समाना ॥
सकल पहाड़िया भेड़ शिशू सम . क्यों री उछलन ठाना ॥
ता प्रभु आगे कांप तु पृथिवी . प्रभु जु यकूब घराना ॥
पानी का जो कुंड बनायो . पत्थर को भगवाना ॥
जल के सोते कठिन शिला को . जोइ बनाय महाना ॥
सकल जगत के सोइ सहायक . करत सदा वह त्राणा ॥

भजन ११५ । लावनी । गीत ११५ ।

अपनी दया सचाई कारण . हे परमेश्वर मेरे ॥
कहें जातिगण क्यों अब उन का . ईश्वर कहां बसे रे ॥
ईश्वर मेरा स्वर्ग लोक पै . जो चह सोइ करे रे ॥
उन की मूरत सोना चांदी . नर के हाथ बने रे ॥
कान नाक मुख गला आंख वे . पैर हाथ भी रखते रे ॥
सुनने सुंघने कहने लखने . चलने करि न सके रे ॥
उन पै रखते जोइ भरोसा . बनवैये उन के रे ॥
वे सब तुल्य उन्हों के होंगे . जड़ अति मूढ़ निरे रे ॥
प्रभु के निकट अशीषित होओ . जो दिव भूमि रचे रे ॥
नर संतति को पृथिवी दीनी . लोक सकल प्रभु केरे ॥
ईश्वर की स्तुति मृतक न करिहैं . कबर में जो उतरे रे ॥
अब से सदा काल प्रभु केरी . हम करिहैं स्तुति टेरे ॥

मैं परमेश्वर केर दया का . भजन करूंगा गाई हो ॥
याते हम को मुक्ति मिली है . प्यार कहत मैं धाई हो ॥
मेरो शब्द विनय प्रभु सुनता . है निज कान लगाई हो ॥
सारे दिन मैं ताहि पुकारिहौं . मेरे जोइ सहाई हो ॥
मृत्यु केर जो बंधन सारे . घेर लियो है आई हो ॥
कष्ट समाधि केर मोहि पकड़े . दुःख शोक मैं पाई हो ॥
मैं प्रभु नाम बिनय करि टेरत . ले मम प्राण बचाई हो ॥
दया दिखावत मेरो ईश्वर . धर्मि दयाल सहाई हो ॥
सकल जनों का है बल रक्षक . परमेश्वर सुखदाई हो ॥
अब मैं दीन भयो प्रभु मोको . दीनो मुक्ति सुहाई हो ॥
फिरो प्राण तू चैन सदन में . प्रभु किय तोर भलाई हो ॥

चला फिरा करिहैं प्रभु आगे . जीवत देश मे जाई हो ॥

भजन ११७ । जैजैवंती । गीत ११७ ।

स्तुति करु हे सब जातिगणों मिलि . श्री परमेश्वर केरे ॥
माने धन्य जगतपति केरा . हे सब लोग अवेरे ॥
हम सब पै प्रभु केरी दाया . हैगी बहुत घनेरे ॥
अटल सचाई सदा काल लों . है परमेश्वर केरे ॥

भजन ११८ । मारू । गीत ११८ ।

है ईश्वर मेरो बल गान . मेरी मुक्ति भयो जो त्राण ॥
है धर्म्मिन के तंबू मांही . आनंद मुक्तिक शब्द सुहान ॥
दहिना हाथ प्रभू का ऊंचा . कौन शूरता करत महान ॥

मैं न मरूंगा जीता रहिहैां . करिहैां प्रभु के कर्मक गान ॥
अति ताड़न से ताड़्यो मोको . मृति को दिय नाहि प्रभू सुजान॥
मेरे हेतु धरम के फाटक . खोलु प्रवेश करूं तहं आन ॥
स्तुति करिहैां परमेश्वर केरी . हर्षित होय सदा चित ठान ॥
है वह फाटक ईश्वर केरा . जैहैं धर्म्मी जहां निदान ॥
मुक्ति भयो अरु सुनी तु मेरी . करिहैां तेरी स्तुती महान ॥
थवई जोइ निकम्मा थाप्यो . कोन शिरा भय सोइ पखान ॥
ईश्वर से यह भयो हमारो . दृष्टि म अद्भुत सोइ दिखान ॥
श्रो परमेश्वर जाहि बनायो . सो दिन है यह मान प्रमाण ॥
उस में हम आनन्द करेंगे . होइहैां मगन सुहर्ष हहान ॥

भजन ११६ । ठुमरी । गीत११९।

उस की साक्षिन को जो पालत . तिहि ढूंढ़त चित लाई रे ॥
उस के मारग पै जो चलते . करत नहीं जु बुराई रे ॥
हे सबरे नर या जग मांही . क्या अति धन्य सुहाई रे ॥
तोर प्रचारी आज्ञा को हम . पालत करि दृढ़ताई रे ॥
मेरे मारग स्थिर हों तेरी . विधि पालन हित आई रे ॥
कौन रीति से तरुण अपानो . मारग शुद्ध रखाई रे ॥
याते तेरे बचन समाना . पालन ताहि कराई रे ॥
मैं ने अपने सारे मन से . तुम को ढूंढ़ फिराई रे ॥
निज आज्ञन से तू नहि मोको . भरमन दे जगराई रे ॥
बचन तिहारो अपने मन में . मैं ने लीन छिपाई रे ॥
याते पाप करूं नहि तेरे : अति विरुद्ध दुखदाई रे ॥
हे परमेश्वर धन्य तु होवै . निज बिधि देहु सिखाई रे ॥

तेरे मुख के सकल न्याय को . मैं निज ओठन गाई रे ॥
तेरे साद्दिन के पथ मांही . मुदित भयो मैं आई रे ॥
तब आज्ञन पै ध्यान करूंगा . तव पथ दृष्टि लगाई रे ॥
अपने ताईं मगन करूंगा . तेरी विधिन मझाई रे ॥
बचन तिहारे को नहि भुलिहैं . हे परमेश सहाई रे ॥

भजन १२० । ललित । गीत १२० ।

दुष्ट जनों की निन्दा से प्रभु . मेरी कर रखवारी ॥
अपने दुःख सकेती में मैं . ईश्वर को सुपुकारी ॥
जो परमेश्वर जगत सहायक . सो अब सुनो हमारी ॥
झूठ ओठ से छली जीभ से . वह मम प्राण निवारी ॥
हे छलि जीभ अधिक क्या करिहै . देहै क्या तोहि भारी ॥

शत्रु गणों के तंबू केरे . वास निकट मैं ढारी ॥
कुशल केर बैरी जो सारे . ता संग प्राण हमारी ॥
निज भलाइ के हेत रहा है . बहुत काल बहु वारी ॥
मैं हूं कुशल बात जब करता . तो वे क्रोध उभारी ॥
होते लैस लड़ाई करने . अपने बल अनुसारी ॥

भजन १२१ । गौरि । गीत १२१।

मैं गिरि ओर जु आंख पसारा . कहं से आय सहाय हमारा ॥
मेरि सहाय प्रभू से येहै . जो दिव भूमि बनावनहारा ॥
रत्तक तेरो अब नहि ऊंघे . पांव टलन नहि देय तिहारा ॥
इसरायल का रत्तक देखो . ऊंघिहै नाहि न सोवनहारा ॥
तेरे दहिने कर पै तेरो . छाया है प्रभु सो रखवारा ॥

दिन को सूरज राति समै में . चंद्र न करिहै तोहि दुखारा ॥
सकल बुराई से जु बचैहै . प्राण बचैहै स्वामि तिहारा ॥
आने जाने में परमेश्वर . तोहि सदाइ बचावनहारा ॥

भजन १२२ । भैरवी । गीत १२२।

यरूसलम का मैं यश गावत . ईश्वर का जो प्यारा ॥
चलें प्रभू के मन्दिर में जो . हम से कहत प्रचारा ॥
आनन्दित हों उन से ऐसा . हैं जो कहनेहारा ॥
यरूसलम हे तव फाटक में . स्थिर पग होय हमारा ॥
यरूसलम में गयो बनायो . ऐस नगर अनुसारा ॥
है संयुक्त आप में जोई . अपने घरों मझारा ॥
साक्षि देन हित इसरायल के . जहं प्रभु गोष्ठी सारा ॥

दाउद केर घराने के हित . सिंहासन तहं सारा ॥
करो प्रार्थना यरूसलम के . कुशल हेतु सब कारा ॥
रहें कुशल से करनेहारे . जोई प्यार तिहारा ॥
तेरे भीतों के अब भीतर . होय कुशल निश्चवारा ॥
तेरे भवनों में अब होवै . सुख अरु चैन अपारा ॥
मैं निज भाई संगी के हित . कहूं कुशल हो थारा ॥
मैं निज प्रभु के मन्दिर कारण . खोजि भलाइ तिहारा ॥

भजन १२३ । सिंदूरा । गीत १२३ ।

हे दिवबासी ओर तिहारे . मैं निज आंख उठाई ॥
सेवक अपने स्वामि हाथ को . ताकत जिहि विधि आई ॥
निज स्वामिनि के कर को ताकति . दासी रीति यथाई ॥

उसी रीति से आंख हमारी . निज प्रभु ओर रहाई ॥
हम पै जब लों दया न करिहै . परमेश्वर जगराई ॥
हम पै दया करो जग स्वामी . हे परमेश सहाई ॥
हैं हम निद्रा से परिपूरित . हे प्रभु लेहु बचाई ॥
सुखी जनों के निन्दा से मम . पूरित प्राण लखाई ॥
गर्वि जनों के ठट्ठे से मैं . अति परिपूरित आई ॥

भजन १२४ । पूर्बी । गीत १२४ ।

धन्य प्रभू परमेश्वर को जो . दुष्ट नखों से मोहि छुड़ाई ॥
कह इसरायल हाय प्रभू जो . होत न मेरे ओर सहाई ॥
जीवत मोहि नर बंश बिरोधी . जाते निगल तुरन्त उठाई ॥
उन का क्रोध जु भड़का हम पै . जल बहि जात तुरन्त हहाई ॥

जोइ अहेर समान न दीनो . उन के दांतन में मोहि आई ॥
व्याध के जाल से छूटि गयो है . प्राण हमार सुपच्छि कि नाई ॥
फंदा टूटि गयो हम छूटे . जासु दया अस मैं सुख पाई ॥
पृथिवी स्वर्ग बनावनहारा . जोइ प्रभू जग के सुखदाई ॥
ता परमेश्वर नाम विभो से . है सुसहाय हमार सदाई ॥

भजन १२५ । विभास । गीत१२५।

श्री परमेश्वर केरे ऊपर . आस भरोस रखै नर जोई ॥
सैहुन गिरि के तुल्य न टलिहै . रहिहै स्थिर सब काल मे ओाई॥
उस के आसपास हैं पर्बत . यरूसलम अति सुन्दर सोई ॥
अब से सदाकाल परमेश्वर . निज जन के चहुं ओार रहोई ॥
धर्मि जनें के भागके ऊपर . दण्ड न दुर्जनता कर होई ॥

अपने हाथ बुराई ऊपर . नहीं बढ़ावे धर्म्मी कोई ॥
हे परमेश्वर भले जनों से . करो भलाई दुःख तु खोई ॥
अरु उन से जो अपने हिय में . खरे सदा नर जो अति होई ॥
बहक जात जो टेढ़े पथ में . पापिन संग तिहि देत मिलोई ॥
इसरायल पै कुशल सदा हो . हे परमेश्वर दुःख विगोई ॥

भजन १२६ । भैरव । गीत १२६

जब तिहि ओर फिरा परमेश्वर . सैहुन के जो फिरनेहारे ॥
तब हम स्वप्नदर्शियन केरे . तुल्य रहे सुख मानि सुखारे ॥
हर्ष शब्द से जीभ हंसी से . ताहि समै मुख भरा हमारे ॥
जातिगणों में कहा उन्हों ने . प्रभु तिहि साथ किये बड़कारे ॥
प्रभ मम साथ किये अति कारज . हर्षित हैं हम स्वामि सहारे ॥

अपने बीज का बोझ उठाये . चला जायगा रोवत न्यारे ॥
पूले अपन उठाये ऐहै . आनंद के संग होइ सुखारे ॥

भजन १२७ । देशावरी । गीत १२७ ।

बनवैयन का बृथा परिस्रम . ईश्वर जो नहि गेह बनावै ॥
जो परमेश्वर स्वामि नगर को . रच्छा में नहि चित्त लगावै ॥
तो उस के रखवारिन केरा . जागन व्यर्थ सु काम न आवै ॥
तड़के उठत अबेरे बैठत . स्रम की रोटी तुम जो खावै ॥
तेरे हेतु बृथा यह सारे . जो परमेश्वर नाहि चहावै ॥
निज प्रिय करनेहारन को प्रभु . नींद में अस बस्तू दे डावै ॥
प्रभू ओर से देखो लड़के . हैं अधिकार महा जु सुहावै ॥
फल प्रतिफल हैं गर्भ केर सो . जिहि देखत मन हर्ष समावै ॥

वाण यथा बलवान हाथ में . तस तरुणाई के शिशु भावै ॥
क्या अति धन्य मनुष्य सोइ जो. वाणन से निज तूण पुरावै ॥
होइहैं लज्जित वे न दुआरे . करत बात रिपु से मन भावै ॥

भजन १२८ । गौरी । गीत १२८ ।

क्या अति धन्य मनुष्य वही है . ईश्वर से है जोइ डरैया ॥
प्रभु के मारग ऊपर जोई . चलत वही नर धन्य बड़ैया ॥
निज कर केर कमाई खैहो . जब तुम तो अति धन्य सुहैया ॥
फलयुत दाख तुल्य तव पानी . अरु तव हेत भलाइ हुवैया ॥
जलपाई के तरु सम तेरे . मंच चहूं दिशि बाल लसैया ॥
जो नर ईश्वर से है डरता . रीति यही सो धन्य हुवैया ॥
सैहुन गिरि से आशिष देवै . तुम को ईश्वर जो जगरैया ॥

भजन १२९ । ललित बधाई । गीत १२९ ।

शत्रु हाथ से मोहि छुटावत . करत प्रभू रखवारी ॥
बहुधा हमै सतायो तौभी . प्रबल भये नहि सारी ॥
हलवाहे हल जोति पीठ पै . लंबो कीन कियारी ॥
दुष्टन की रस्सी को काटा . धर्मी प्रभु सुखकारी ॥
सैहुन के सब शत्रु लजैहैं . जाय हटाय पिछारी ॥
ता छत घास तुल्य वे होइहैं . सुखत बिना जु उखारी ॥
लवनहार याते निज कर को . भरते नहि किछु वारी ॥
पूलन केर बंधैया अपनो . भरत नहीं अंकवारी ॥

भजन १३० । ठुमरी । गीत १३० ।

गहराई से तुमै पुकारूं . मेरी सुन जगपाला ॥

लगे रहैं मम विनय शब्द पै . तेरो कान भुआला ॥
खड़ा रहैगा कौन दृष्टि जो . अघ पै करो तु पाला ॥
तेरे पास क्षमा है याते . तुम से डरें निराला ॥
ईश्वर की मैं बाट जोहता . प्राणहु मम सब काला ॥
आशावान बचन का उस के . मैं हूं तजि भ्रमजाला ॥
जो बिहान के बाट खोजते . उन से अधिक विशाला ॥
मेरो प्राण प्रभू की बटिया . खोजत है सुख शाला ॥
हे प्रभु दासो आस रखो सब . ईश्वर पै सब काला ॥
दया मुक्ति की है अधिकाई . ईश्वर पास निराला ॥
निज दासन को वही छुटैहै . पापन से तत्काला ॥

भजन १३१ । जैजैवंती । गीत १३१ ।

बड़ी बात अरु अद्भुत में नहि . हों लवलीन सुहाता ॥
सदृश और चुपचाप न कीनो . अपन प्राण को मैं प्रभु दीनो ।
दूध छुटा शिशु करत मातु पै . ज्यों बिस्राम सुखाता ॥
मोपै होत विस्रामी प्राणा . दूध छुटा मैं बाल समाना ।
ईश्वर जानत है जगराजा . जगके जो सुखदाता ॥
हे इसरायल ईश्वर केरे . आशावान तु होहु अबेरे ।
अब से सदा काल लों उस में . रहो प्रेम से माता ॥

भजन १३२ । भैरवी । गीत १३२ ।

रहो मंडली मांझ अपाने . हे परमेश्वर प्यारे ॥
हाजिर होहु कृपा करि अपने . प्यारे लोग मझारे ॥
पहिरें बस्त्र सचाई केरा . याजक सभी तिहारे ॥

शब्द करें अति आनन्द केरा . साधू जन तव सारे ॥
सैहुन को चुन लीनो स्वामी . परमेश्वर सुख कारे ॥
वह उस के हित होय निवासा . चहत प्रभू सब कारे ॥
बास करूंगा सदा यहीमें . है बिस्राम हमारे ॥
तृप्त करूंगा रोटी से मैं . उस के रंक दुखारे ॥
उस के भोजन पै मैं आशिष . देहैं बारंबारे ॥
पहिरैहैं तिहि वस्त्र मुक्ति का . याजक जो उस का रे ॥
आनंद का शुभ शब्द करैंगे . उस के साधू सारे ॥
दाउद के हित वहां जमैहैं . सुन्दर सींग संवारे ॥
निज अभिषिक्त हेतु मैं दीपक . सिद्ध किया परचारे ॥
उस के शत्रुन को पहिरैहैं . बस्त्र लाज का भारे ॥
उस पर उस का मुकुट रहेगा . सदा खिला मनुहारे ॥

हारून की डाढ़ी अरु उस के . पहिरावा का खूंट जु आई ॥
बहि जाता है तेल जु तहं लों . ताके सम वह तेल सुहाई ॥
है हरमून कि ओस समाना . तामें कुछुक न भेद लखाई ॥
वह सैहून पहाड़ के ऊपर . जोई ओस समूह गिराई ॥
आशिष दीन वहां प्रभु स्वामी . श्री परमेश सदा सुखदाई ॥
सदा काल के जीवन को वह . आज्ञा कीन दयाल सहाई ॥

भजन १३४ । कंगूरा । गीत १३४ ।

ईश्वर का धनिबाद करो हे . प्रभु के सेवक सारा रे ॥
रात समै प्रभु के घर मांही . रहत खड़े जु सुखारा रे ॥
ईश्वर केरे ओर उठाओ . अपना हाथ पसारा रे ॥
धनि धनिबाद करो प्रभु केरा . जोइ सदा रखवारा रे ॥

श्री परमेश्वर सरग भूमि का . जोइ बचावनहारा रे ॥
सैहुन से तोहि आशिष देहै . जोइ प्रभु जगतारा रे ॥
दीन दयाल जगत का जोई . पाप मिटावनहारा रे ॥

भजन १३५ । सिंदूरा । गीत १३५ ।

स्तुति करु वाको निज करि दाया. जोई जगत बनाया ॥
मैं जानत हैं है परमेश्वर . सो महान जगराया ॥
मेरे सारे देवन में से . उत्तम सोइ सहाया ॥
स्वर्ग भूमि गहिराइ सिंधु में . करता जो मन भाया ॥
भूमि सीम से भाफ उठावत . घन हित तड़ित उगाया॥
निज भंडार से पवन उड़ावत . तेरा नाम सदाया ॥
है वह पीढ़ी लों प्रभु तेरो . सुमिरण है सुखदाया ॥

मनुज हाथ से बनी सुमूरति . उन में सार न आया ॥
है मुख कान आंख वे नाहीं . कहि सुनि देखि सकाया॥
हाथ पांव सब बने बनाये . मुख में स्वांस न पाया ॥
उन के सम होइहैं बनवैये . अरु जो आस लगाया ॥

भजन १३६ । देशावरी ।　　　　गीत १३६ ।

माना धन्य प्रभू का जाको . हैगी दया सदाई हो ॥
है वह भला अकेला जोई . अद्भुत काम बनाई हो ॥
बुद्धि साथ जो स्वर्ग बनायो . जल पै भू फैलाई हो ॥
बड़ो बड़ी जो ज्योति बनायो . दिन हित भानु उगाई हो॥
रात समै पै प्रभुता कारण . चन्द्र भगण चमकाई हो ॥
दुःख समै मम खबर लियो जो . रिपु कर से जु छुटाई हो ॥

सब शरीर को भोजन देता . सर्बशक्तियुत आई हो ॥
स्वर्गाधिप पितु केर करो सब . धन्यबाद हरषाई हो ॥

भजन १३७ । सुहब । गीत१३७।

गीत प्रभू का क्यों तहं गावैं . जो है भूमि पराई ॥
बाबुल की नदियों पै हम को . सैहुन की सुधि आई ॥
तुरतहि करुणा से हम आतुर . रोये बैठि तहांई ॥
बेंतन के तरु मध्य अपानी . बीणन को लटकाई ॥
बांधनहारे लूटनहारे . मेरे सब तहं आई ॥
मम अनंद अरु गीत शब्द को . सुनने सभी चहाई ॥
कहा हमारे हित कुछ गाओ . सैहुन गीत बजाई ॥
भूलि जाय जो मेरा दहिना . हाथ बुद्धि अपनाई ॥

तिस्से जो मैं श्रेष्ठ न जानूं . यरूशलम को भाई ॥
स्मरण तिहारो करूं न जो मैं . तुम को देउं भुलाई ॥
तालू से लगि जाय हमारो . जीभ यही निरणाई ॥

भजन १३८ । भैरव । गीत १३८ ।

अपने सारे मन से तेरी . स्तुति करिहैं मैं गाये ॥
देवन के आगे स्तुति तेरी . गैहैं मैं हरषाये ॥
तेरे शुद्ध मंदिर की ओरा . झुकिहैं सीस नवाये ॥
तेरी दया सचाई कारण . हे ईश्वर जगराये ॥
तेरे नाम की स्तुति मैं गैहैं . तन मन चित्त लगाये ॥
सकल नाम के ऊपर तू निज . बचनहि अधिक बढ़ाये॥
निस दिन मैं ने तोहि पुकारा . मेरी सुनी तु राये ॥

बल के साथ करत बलवंता . आत्मा में मोहि आये ॥
पृथिवी के सब भूपति को तू . निज मुख बचन सुनाये॥
तेरा वे स्वीकार करेंगे प्रभु मारग में गाये ॥
ईश्वर का ऐश्वर्य्य महाना . होइहै सदा सुहाये ॥
नम्रन को देखत है स्वामी . है महान जगराये ॥
गर्बिन को दूरहि से जानत . सर्बज्ञानि सहाये ॥
संकट मध्य चलूं जो मोको . रखिहै जियत बचाये ॥
अपना हाथ बढ़ैहो मेरे . शत्रु क्रोध में आये ॥
अपने दहिने हाथ से मोको . तुही बचैहो राये ॥

भजन १३९ । श्री । गीत१३९।

हे परमेश्वर जानत हो तुम . खोज किया प्रभु तहि हमारो ॥

मेरी जीभ पै बात न ऐसी . जाहि न तू प्रभु जाननहारो ॥
अपना हाथ रखत तू मोपै . चहुंदिश घेरत मोहि रखवारो ॥
यही ज्ञान है अद्भुत ऊंचा . जहं लगि है नहि पहुंच हमारो ॥
तेरे आतम आगे से मैं . भागि किधर को जाउं नियारो ॥
स्वर्ग उपर जो मैं चढ़ि जाऊं . तुही वहां भी है जगतारो ॥
जो मैं कबर बिछोंना डालूं . देख वहां भी तुही तयारो ॥
मैं बिहान के पर फैलैहौं . रहूं सिंधु के अंत नियारो ॥
तहं भी करिहै मम अगुआई . पकड़ेगा मोहि हाथ तिहारो ॥
मैं कहता हूं मोहि दबाये . डालत केवल है अंधियारो ॥
मेरे चहुंदिश रात भयो अब . जो अति शोभित है उंजियारो ॥
नहि अंधियारा तुम पर ठहरै . रातहु दिन सम चमकत सारो ॥
जस अंधियारा तस उंजियारा . स्वामि हृदय का तुमो हमारो ॥

दुष्ट मनुज से मोहि छुटाओ . हे परमेश्वर प्यारे ॥
नर अंधेरी से तू रक्षा . करिहो प्रभू हमारे ॥
मन में जोइ बुराइ कि चिंता . करते हैं सब कारे ॥
नित्य लड़ाई के हित सोई . होत इकट्ठे सारे ॥
सांप समान चोख किय अपनी . जिह्वा को दुरचारे ॥
होंठन के नीचे है उन के . सांप जहर दुखकारे ॥
मेरी रक्षा तूही करिहो . दुर्जन से करि न्यारे ॥
मेरे पग को ढा देने को . चिंता जो मन धारे ॥
रस्सी फंदा जोइ बिछाई . मम हित गर्बी सारे ॥
जाल बिछायो फंद लगायो . पथ में हेतु हमारे ॥
सर्बशक्तियुत तूही मेरा . प्रभु से कहूं पुकारे ॥

दुष्ट केर इच्छा को पूरी . नहीं करो तू प्यारे ॥
उस के युक्तिन को नाहि पूरा . करो तु हे सुखकारे ॥
नाहि तो वे सब ऊंचे होइहैं . हे बल मुक्ति हमारे ॥

भजन १४१ । जैजैवंती । गीत १४१ ।

करो शीघ्रता ओर हमारे . तुमैं पुकारत हूं सुखदानी ॥
मेरे शब्द पै कान लगाओ . तुमहि पुकारू मैं जब चाणी ॥
होयं उपस्थित आगे तेरे . मेरे बिनय सुगंध समानी ॥
मेरे हाथन केर उठाना . होवै सांझ कि भेंट तुलानी ॥
मुख पै मम पहरू बैठाओ . होंठन द्वार कि रच्छा ठानी ॥
बुरी बात की ओर न मेरे . मन को झुकने देहु न चाणी ॥
करत नरन के संग बुराई . जोइ कुकर्मन के हैं खानी ॥

उन के स्वादित भोजन में से . खाउं नहीं तिन संग मिलानी ॥
उन के संग कुकर्म करों नहि . ऐसि दया करु हे मुददानी ॥
ईश्वर धर्मी मोहि दया संग . दपटे मारे होहुं लशानी ॥
मम सिर नहि सिर तेल से नहि कर. होइहै फिर जु अवश्य बहानी॥
उन के सकल बुराई के बिच . होइहै फिर मम बिनय सुहानी॥
तेरे ओर आंख है मेरी . तुम पै मोर भरोस लगानी ॥
मेरो प्राण को नांहि उड़ेलो . हे प्रभु जग के मुक्ति सुदानी ॥
वे सब मेरे हेतु बनायो . फंदा जोइ महा दुख खानी ॥
तिस्से पापिन जालन से तूं . मोहि बचाओ अपनो जानी ॥

भजन १४२ । कलेवा । गीत १४२।

मैं निज मुख से तोहि पुकारूं . ईश्वर जोइ सहाई हो ॥

अपना दुख मैं वर्णन करता . प्राण मोर घबड़ाई हो ॥
मेरो पथ को तू है जानत . जहं मैं चलत रहाई हो ॥
मेरे लिये छिपाके फंदा . वे सबरे जु लगाई हो ॥
दहिने ओर तु देखो मेरा . चीन्हनहार न आई हो ॥
मेरे प्राण का नहि पुछवैया . शरण न कोइ दिखाई हो ॥
हे परमेश्वर तुमैं पुकारूं . मेरो तुही सहाई हो ॥
जीवन केरे देश मांझ तूं . भाग हमारो आई हो ॥
मैं अति दुर्बल सुन तू मेरो . रोना सुरत लगाई हो ॥
मेरे बली सतावनहारे . तिन से देहु छुटाई हो ॥
मेरे प्राण को बंदीगृह से . तू छुटाव सुखदाई हो ॥
तेरे नाम केर स्तुति स्वामी . किई जाय जगराई हो ॥
हम पै दया करोगे जबहीं . घेरिहैं धर्मी आई हो ॥

मेरो बिनय सुनो परमेश्वर . अपनो कान लगाये ॥
अपनो धर्म सचाई के संग . मेरी सुनो सहाये ॥
निज सेवक के संग लड़ने को . मत बिचार कर राये ॥
तव सन्मुख नहि कोई प्राणी . निर्दोषी ठहराये ॥
पीछे पड़ा प्राण के मेरे . है शत्रू दुखदाये ॥
मेरे जीवन को जु लुथाड़त . पृथिवी लों वह आये ॥
अगिले मृतकन के सम मोको . अंधियारे बैठाये ॥
उजड़ गयो मन मेरा मुझ में . मम प्राणहु मुरछाये ॥
स्मरण करत हों अगिले दिनको . हे परमेश सहाये ॥
तेरे सारे कारज पै मैं . सोच करत चित लाये॥
तेरे कर की रचना ऊपर . ध्यान करत हूं राये ॥

हे परमेश्वर करो शीघ्रता . मोर सुनो चित लाये ॥
निज मुख हम से नहीं छिपाओ . क्षीण प्राण मम आये ॥
नहि तो गड़हे में जा गिरते . तिहि संग जाव मिलाये॥
तुम पै रखत भरोसा कल को . मोहि दे दया सुनाये ॥
वह मारग तू हमैं बताओ . जिस में चलूं सदाये ॥
तेरे ओर उठावत हूं मैं . अपनो प्राण हहाये ॥

भजन १४४ । देशावरी । गीत १४४।

क्या है मानुष जाहि तु जाने . हे परमेश्वर नाथ सहाई ॥
है क्या मानुष का सुत जिस का . सोच करो तुम से सुखदाई ॥
ब्यर्थ बस्तु सम हैं नर जिन का . छाया सम दिन बीतत जाई ॥
अपनो सरग झुकाओ स्वामी . छुओ पहाड़न को अघ भाई ॥

५० उन से धुआं उठे अरु उन को . बिथराओ तू तड़ित गिराई ॥ १९०
घबराओ तू उन को त्राता . अपनो धन्वा बाण चलाई ॥
ऊपर से निज हाथ बढ़ाओ . हम को लेहु प्रभू तु बचाई ॥
बंश विदेशिन के कर से तू . बाहू बल मोहि लेहु छुटाई ॥
कहत बृथा जिन का मुख उन का . झूठ केर दहिना कर आई ॥
तरुणाई में पुत्र हमारे . पैाधों के सम बढ़ैं हहाई ॥
मंदिर केर बनावट मांहो . कोने के हित जोइ खुदाई ॥
ता प्रत्थर सम सकल हमारी . बेटी शोभित हों सुखदाई ॥
बिबिध अन्न से खात हमारे . भरे रहैं सब काल सुहाई ॥
खेतन में हमरी सब भेड़ी . जनें हजारन शिशु समुदाई ॥
रहैं लदे सब बैल हमारे . हानि बिगाड़ न होय सदाई ॥
कछुक बिलाप होय नहि मेरे . पथ में सो नर धन्य बड़ाई ॥

करिहैं बड़ाइ तिहारो . तुही महराज हमारो ॥
धन्यवाद करिहैं मैं तेरे . नाम केर सब कारो ॥
तूही कृपाल दयाल धीरजी . सब के तू हितकारो ॥
प्रभू सुखदाइ सहारो ।
सकल क्रिया स्तुति करत तिहारी. उन पै दया तिहारो ॥
राज्य सनातन का है तेरा . प्रभुता पीढ़िन सारो ॥
करत धनि साधु पुकारो ।
सारे गिरनेहारन केरा . तू ही थामनहारो ॥
सारे झुके हुओं का स्वामी . तूहि उठावनहारो ॥
दुखित दुख मेटत सारो ।
सब की आंख लगी रहती हैं . तेरे ओर पियारो ॥
सब का भोजन देत समै पै . करत सुतुष्ट सुखारो ॥

खोलि निज मुठि पसारो ।
अपने सारे पथ में धर्मी . तुम ही है। जगतारो ॥
निज सब कारज में तु दयाला . इच्छा पूरक प्यारो ॥
सबहि के जाननहारो ।
साथ सचाई के जु पुकारैं . तिन के निकट तयारो ॥
निज डरवैयन केर तु इच्छा . करिहै। पूर सकारो ॥
नाथ जग स्वामि सहारो ।
सुनिहै। उन की तुमहि दोहाई . प्रेमिन के रखवारो ॥
दुष्टन को तुम नाश करोगे . भक्त बचैहै। सारो ॥
प्रभू करि दुःख नियारो ।
प्रभु के स्तुति की बात करेगा . यह मुख हर्षि हमारो ॥
तेरे शुद्ध नाम का करिहैं . धन्यबाद सब कारो ॥

श्री प्रभू परमेश केरी . स्तुति करूंगा गाइ रे ॥
जियत जैालों मैं रहूंगा . गाइहैां हरषाइ रे ॥
रखत जाइ भरोस प्रभु पै . धन्य सा अति आइ रे ॥
स्वर्ग भूमि समुद्र जा कुछ . सबहि जाइ बनाइ रे ॥
जा सचाई केर रक्षक . सदा भक्त सहाइ रे ॥
सब सताये जनन के हित . जा बिचार कराइ रे ॥
देत भूखन का जु रोटी . सकल कैदि छुटाइ रे ॥
अंध जन की आंख खोलत . झुकत का जु उठाइ रे ॥
सकल धर्मिन का जु ईश्वर . करत प्यार सदाइ रे ॥
सब विदेशिन केर रक्षक . सोइ स्वामि सहाइ रे ॥
रांड और अनाथ का जा . है संभालत राइ रे ॥
दुष्ट लागन केर पथ का . करत टेढ़ा ढाइ रे ॥

हे सुसैहुन तोर ईश्वर . सकल पीढ़िन ताइं रे ॥
सो सनातन ताइं करिहै . राज्य जो सुखदाइ रे ॥

भजन १४७ । लाउनी । गीत १४७ ।

स्तुति गाना है भला हमारे . ईश्वर के हित जानो रे ॥
जोइ मनोहर है स्तुति करना . सुंदर है मन ठानो रे ॥
चूर्णित अंतःकरणो जितने . उन को वह चंगा करता ॥
उन के घावों को जो बांधत . गिनती तारों को कहता ॥
ले ले नाम बुलाता ओही . उन्हीं सभों को जगवाता ॥
महासमर्थी प्रभू हमारा . है महान जो सुखदाता ॥
दीन जनों को वही उठाता . श्री परमेश्वर महराजा ॥
पृथिवी पै वह दुष्टजनों को . दे मारत है शुभ काजा ॥

ईश्वर के हित सब मिलि गाओ . वीणा बजाके सब कारा ॥
स्वर्ग ढांपता मेघन से जो . भूमि हेत घन सिध करता ॥
पर्वत पै जो घास उगाता . सब के दुख को वह हरता ॥
जो चिल्लाते कौवन केरे . बच्चे तिन्हैं खिलाता जो ॥
भोजन देता पशु पक्षी को . शिशु को दूध पिलाता सो ॥
अपने ईश्वर को सब लोगो . गाय बजा स्तुति ठानो रे ॥ २ ॥
तेरे फाटकों के जु अड़ंगे . किये तिन्हैं जो दृढ़ताई ॥
आशीर्वाद दियो बिच तेरे . तेरे बालकन को आई ॥
तेरे सिवानों को ठहराता . चैन जगत के सुखदानी ॥
गेहूं की चिकनाई से जो . तुझे तृप्त करता मन मानो ॥
पृथिवी पै निज आज्ञा भेजत . तुरत दौड़ती उस की बाता ॥
ऊन की नाईं हिम जो देता . राख तुल्य पाला बिथराता ॥

ग्रास कि नाईं जोई स्वामी . निज तुषार को फेंकता है ॥ ३ ॥
उस के शीतलता के आगे . कौन खड़ा हो सकता है ॥
अति अद्भुत है उस की महिमा . सब में वही सयानो रे ॥

भजन १४८ । टप्पा बसंत ।　　गीत १४८ ।

श्री परमेश्वर केर नाम की . स्तुति करु सबरे गाय गाय ॥
उत्तम केवल नाम उसी का . बिभव भूमि दिव छाय छाय ॥
उस के सकल दूत अरु सेना . स्तुति करु सबरे धाय धाय ॥
सूरज चंद्र सकल तारागण . करो स्तुती शिर नाय नाय ॥
हे स्वर्गन के स्वर्गो हे जल . सरग उपर जो आय आय ॥
करें स्तुती प्रभु नाम कि सबरे . हर्षित हो चित लाय लाय ॥
निज आज्ञा से जोइ रच्यो है . सब को श्री जगराय राय ॥

मच्छ कच्छ हिम सब गहिराई . कुहिरा आग जु आय आय ॥
सबरे करो स्तुती प्रभु केरे . पालत बचन जु पाय पाय ॥
आंधी बौंडर जलचर थलचर . बनचर नभचर गाय गाय ॥
सकल पहाड़ पहाड़ी तरुवर . पशु पक्षी भ्रम ढाय ढाय ॥
जीव जंतु अरु कीड़ मकोड़े . स्तुति करु सब मुख बाय बाय॥
राजा रैयत न्याई अधिपति . रंक धनी मन लाय लाय ॥
तरुणी तरुण कुमार कुमारी . वृद्धा बृद्ध जु धाय धाय ॥
सबरे ईश्वर की स्तुति गाओ . सोइ प्रभू सुखदाय दाय ॥

भजन १४९ । मधुर बसंत । गीत १४९ ।

गीत नया प्रभु के हित गाओ ।
सिद्धन केर सभा मे जाके . स्तुति प्रभु केर सुनाओ ॥

सिर्जनहारे से इसरायल . हर्षित होहु सदाओ ॥
सैहुन के हे बंश अपाने . भूपति से हरषाओ ॥
बीणा ताल मृदंग बजाके . नाचि प्रभू स्तुति गाओ ॥
है प्रसन्न निज लोगन से जो . स्रो परमेश कहाओ ॥
करत बिभूषित दीन जनों को. मुक्ती से जगराओ ॥
बैठ प्रतिष्ठा में सब सिद्धो . आनंद ताल बजाओ ॥
बैठि बिछौने पै मिलि सारे . आनंद शब्द उठाओ ॥
सर्बशक्तियुत केर बड़ी स्तुति. बिबिध भांति स्वर गाओ॥

भजन १५० । मधुर बसंत । गीत १५० ।

धर्मधाम में स्तुति कर वाकी . सर्बशक्तियुत जो जगतारा ॥
उस के बल के नभ में उन की . करो स्तुती परचारा ॥

तुरही ताल मृदंग बांसुरी . और बजा करतारा ॥
बरबत वीणा झांझ डफ ढोलू . तबला और सितारा ॥
सबहि बजाय नाचि प्रभु केरी . करो स्तुती सब कारा ॥
ईश्वर की स्तुति गावैं सबरे . जिन के स्वांस अधारा ॥

दाऊदमाला समाप्त हुई ।

1st Edn.] [5,000 Copies,

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1882.

निघण्ट ।

नार्थ इण्डिया ट्राक्ट सुसैटी की किताबों की फिहरिस्त जो कि इलाहाबाद नार्थ इण्डिया ट्राक्ट सुसैटी के कुतुबखाने में मिल सकती हैं ॥

	आना	पाई
तीन बात का वर्णन ।	०	१
सुबोध पत्रिका ।	०	१
दृष्टान्त और उस का बर्णन ।	०	१
पाप की बुराई ।	०	१
३४ सवाल हिन्दू धर्म्म ।	०	१
हिन्दू धर्म्म का वर्णन ।	०	१
इलिशिबा महारानी की मृत्यु ।	०	१
यात्री विज्ञापन ।	०	१
अतुल्य मित्र का वर्णन ।	०	२
सूनसान टापू का दृष्टान्त ।	०	२
धर्म्मपुस्तक का सार ।	०	३
महाराज और गृहस्थ की कथा ।	०	३
कृष्णपरीक्षा ।	०	३
धर्म्मपुस्तक का सारांश ।	०	३
प्रश्नोत्तर धर्म्म के विषय में ।	०	३
रामपरीक्षा ।	०	३
उपदेश माला ।	०	३
एक अंधी लड़की की कहानी ।	०	३
ज़मीन्दार का दृष्टान्त ।	०	३
धर्म्मवार्त्ता ।	०	३
किसान का दृष्टान्त ।	०	३
गुरुपरीक्षा ।	०	३
मुक्ति का मार्ग ।	०	३
ख्रिस्तीय माता ।	०	३
रीतिदर्पण ।	०	३
पिटकेअरन टापू का वर्णन ।	०	३
यिसू के कई दृष्टान्त ।	०	३
विचार संग्रह ।	०	३
धर्म्मपुस्तक के आदि भाग में लिखा हुआ ख्रीष्ट का समाचार ।	०	४

	आना
ईश्वरीय मत का संक्षेप ।	०
हितशिक्षा ।	०
श्रेष्ठमार्गी ।	०
सत्य शतक ।	०
हिन्दू धर्म्म प्रसिद्धकरण ।	०
वह श्रेष्ठ मूल कथा ।	०
अद्भुतचरित्र दर्पण ।	०
सृष्ट्युत्पत्ति वर्णन ।	०
प्रेम दोहावली ।	०
मुक्तिमाला ।	०
सत मत का मार्ग ।	०
धर्म्मतुला ।	०
स्तुतिप्रकाश ।	१
छन्दसंग्रह ।	१
वादनिवारण ।	१
मुक्तिमुक्तावली ।	२
धर्म्माधर्म्म परीक्षा पत्र ।	२
ज्योतिकिरण ।	२
मत परीक्षा पहिला खण्ड ।	२
दूसरा खण्ड ।	३
सत्वरजस्तमस्संग्राम ।	३
मुमुक्षु वृत्तान्त ।	३
ख्रीष्ट चरित्रामृत पुस्तक ।	३
श्रीमुखमूलपद ।	३
सतमत निरूपण ।	४
श्री यसू ख्रिष्ट चरित्र दर्पण ।	४
ख्रिष्ट विजय ।	४
षड्दर्शनदर्पण ।	६
यात्रास्वप्नोदय ।	८